ॐ **श्री गणेशाय नमः**

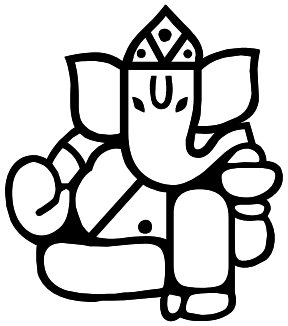

Horoscope of **Sinto Placid**
Prepared using **Astro-Vision LifeSign** Software.
Licensee: Astro-Vision Futurtech Pvt.Ltd.

~~~~~~

जननी जन्म सौख्यानाँ
वर्धनी कुल सँपदाँ
पदवी पूर्व पुण्यानाँ
लिख्यते जन्म पत्रिका

~~~~~~

माता और संतान की भलाई के लिए
परिवार की संतोष वृद्धि के लिए
प्राचीन धार्मिक प्रक्रिया की अनुगम के लिए
यह जन्मकुण्डली लिखा गया है

Astro-Vision
YOUR TOMORROW

नाम	: Sinto Placid
लिंग	: पुरुष
जन्म तिथि	: 25 फेब्रुवरी, 1983 शुक्रवार
जन्म समय (Hr.Min.Sec)	: 09:15:00 PM Standard Time
समय मेखल (Hrs.Mins)	: 05:30 ग्रीनवीच रेखा के पूर्व
जन्म स्थल	: Ernakulam
रेखांश : अक्षांश (Deg.Mins)	: 76.17 पूरब , 9.59 उत्तर दिशा
अयनांश	: चित्रपक्ष उ 23 डिग्रि. 37 मिनिट. 2 सेकेन्ड.
जन्म नक्षत्र - नक्षत्र पद	: **आशलेष** - 1
जन्म राशी - राशी का देव	: **कर्क** - चन्द्र
लग्न - लग्न का देव	: कन्या - बुध
तिथि	: त्रयोदशी, शुक्लपक्ष

सूर्योदय	: 06:41 AM Standard Time
सूर्योस्त	: 06:35 PM " "
दिनामान (Hrs. Mins)	: 11.54
दिनामान (Nazhika.Vinazhika)	: 29.45
प्रादेशिक समय	: Standard Time - 25 Min.
ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जन्म तिथि	: शुक्रवार
कलिदिना	: 1856925
दशा पद्धति	: विमशोत्तरी पद्धति, साल = 365.25 दिन

नक्षत्र का देव	: बुध
गणम्, योनी, जानवर	: असुर, पुरुष, बिल्ली
पक्षी, पेड	: महोक, नींबू का पेड़
चन्द्र अवस्था	: 2 / 12
चन्द्र वेला	: 6 / 36
चन्द्र क्रिया	: 10 / 60
ठगड़ा राशी	: वृषभ,सिंह
करण	: ग्रघभ
नित्ययोग	: शोभना
सूर्य का राशी - नक्षत्र का स्थान	: कुंम्भ - शताभिषा
अनगदित्य का स्था	: हाथ
Zodiac sign (Western System)	: Pisces

गृहों का रेखांश

गृहों का रेखांश पश्चमी पद्धती के प्रकार दिया गया है। जिसमें युरानस, नेपट्यून और प्लूटो भी शामील किया गया है।

पाश्चात्य पद्धति के अनुसार राशिचक्र में आप का राशी - मीन

गृह	रेखांश डि : मि :से	गृह	रेखांश डि : मि :से
लग्न	197:37:15	गुरु	249:31:21
चन्द्र	132:26:23	शनि	214:17:9 रितु
रवि	336:28:16	युरेनस	248:58:55
बुध	315:11:32	नेप्टयून	268:54:12
शुक्र	3:23:58	प्लूटो	209:21:25 रितु
मंगल	0:29:44	नोड	90:54:33

गृहों का निरायन रेखांश भारतीय ज्योतिष शास्त्र के आधार पर किया गया है। यह ऊपर बताई गई 'शयन मूल्यों' के आधार पर की गई है।

गृहों का निरायन रेखांश

गृहों के निरायन रेखांश पर भारत के ज्यातिष शास्त्र की नीव डाली गई है। यह शयन रेखांश के मूल्य से (गुणांक से) अयनांश मूल्य को कम करने से प्राप्त होता है।

अयनांश की गणना अलग - अलग पद्धती से की जाती है। उनके प्रकार और आधार नीचे बताये गये है:
चित्रपक्ष उ 23डिग्रि.37 मिनिट.1 सेकेन्ड.

गृह	रेखांश डि : मि :से	राशी	राशी के रेखांश प्रकार डि : मि :से	नक्षत्र	पद
लग्न	174:0:13	कन्या	24:0:13	चित्रा	1
चन्द्र	108:49:22	कर्क	18:49:22	आशलेष	1
रवि	312:51:14	कुंम्भ	12:51:14	शताभिषा	2
बुध	291:34:30	मकर	21:34:30	श्रावण	4
शुक्र	339:46:56	मीन	9:46:56	उत्तर भद्रपाढा	2
मंगल	336:52:43	मीन	6:52:43	उत्तर भद्रपाढा	2
गुरु	225:54:19	वृशचिक	15:54:19	अनुराधा	4
शनि	190:40:7	तुला	10:40:7रितु	स्वाति	2
राहु	67:17:32	मिथुन	7:17:32	आर्द्र	1
केतु	247:17:32	धनु	7:17:32	मूल	3
गुलिक	239:15:25	वृशचिक	29:15:25	ज्येष्ठ	4

नक्षत्र का स्वामी / उप स्वामी / उप उप स्वामी

गृह	नक्षत्र	नक्षत्र का देव	उप स्वामी	उप उप स्वामी
लग्न	चित्रा	मंगल	मंगल	शुक्र
चन्द्र	आशलेष	बुध	केतु	चन्द्र
रवि	शताभिषा	राहु	बुध	केतु
बुध	श्रावण	चन्द्र	शुक्र	गुरु
शुक्र	उत्तर भद्रपाढा	शनि	शुक्र	शनि
मंगल	उत्तर भद्रपाढा	शनि	बुध	गुरु
गुरु	अनुराधा	शनि	गुरु	शुक्र
शनि	स्वाति	राहु	शनि	शनि
राहु	आर्द्र	राहु	राहु	शनि
केतु	मूल	केतु	राहु	चन्द्र
गुलिक	ज्येष्ठ	बुध	शनि	चन्द्र

राशी

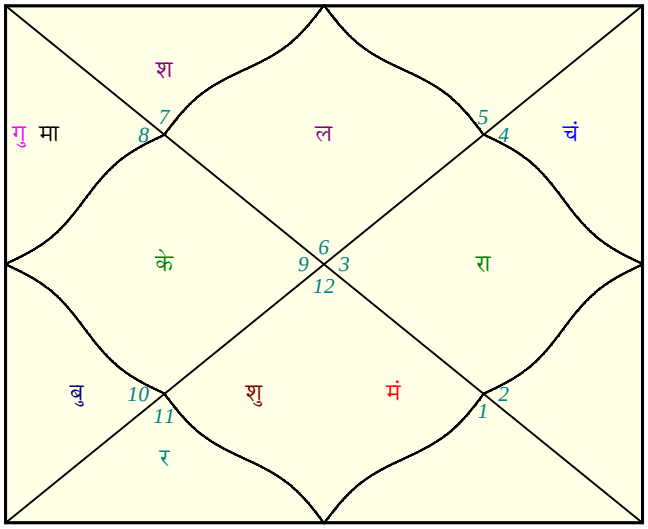

नवांश

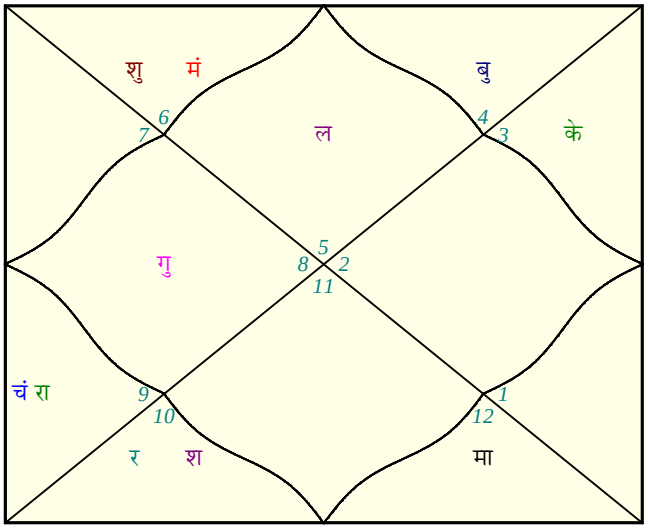

जन्म के समय दशा की समतुलना = बुध 14 साल, 3 महीने, 0 दिन

उपग्रह

हर गृह की अपेक्षा उपगृह की भी गुणना की जाती है। चन्द्र, शुक्र, मंगल, राहु और केतु के उपगृह की गुणना सूर्य के रेखांश के आधार की जाती है। यह इस प्रकार है।

धुमीदी संग के उपग्रह

गृह	उपग्रह	गुणने की प्रक्रीया या पध्धती
मंगल	धूम	सूर्य का रेखांश + 133 डिग्रि. 20 मिनिट.
राहु	व्यथिपात	360 - धूम
चन्द्र	परिवेष	180 + व्यथिपात
शुक्र	इंद्रचाप	360 - परिवेष
केतु	उपकेतु	इंद्रचाप + 16 डिग्रि. 40 मिनिट.

सूर्य, बुध, गुरु, शनी के उपगृहों का तथा अन्य मंगल के उपग्रहों के गुणन का आधार रात और दिन के आठ समान काल में बाँटे गये विभाजन पर आधारीत रहा है।

प्रारंभ विभाग दिन के स्वामित्व के लिये रखा गया है जब की शेष भाग हप्ते के दिल के स्वामित्व के लिये उपयोग में लिया गया है। आठ विभाजन के अधिपती नहि रहे हैं।जन्म रात को हुवा हो तो आठ समभाग से सात विभाजीत भागों को गृहों का स्वामी स्थान दिया गया है। यह सप्ताह के पाँचवे दिनसे गिना जाता है।

रेखांश की गिनती केलिये दो अलग-अलग पध्धतियों का आविश्कार किया गया है।प्रथम पध्धति के अनुसार, प्रारंभ समय काल (गृहों के स्वामी) गृहाधीपती के अधिन रहता है। दूसरी पध्धति के अनुसार काल के अंतिम चरण गृहाधीपती के आधिन रहता है।

जब गुलीक के हिसाव से देखों तो शनी के उपग्रह से एक तीसरी पध्धती का भी अनुसंधान किया गया जिससे रेखांश की गिनती की जाती है। यह नीचे दिये गये स्थाई उदयकाल पर निर्भर है।इस प्रकार गुणनफल जो भी प्राप्त हुआ है इसे 'एस्ट्रो विज़न' के पध्धती के अनुसार 'मांदी' कहा जाता है। जन्मपत्रिका मे मुख्य गृह और राशी चक्र के साथ दिया गया है।

दिन	दिन के समय जन्म	रात के वक्त जन्म
रविवार	26 गटि	10 गटि
सोमवार	22	6
मंगलवार	18	2
वुधवार	14	26
गुरुवार	10	22
शुक्रवार	6	18
शनिवार	2	14

गुलिकादी का समूह।

स्वीकार्य पध्धती : लग्न के प्रारंभकाल

गृह	उपग्रह	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय
रवि	काल	2:8:48	3:39:33
बुध	अर्धप्रहर	20:5:48	21:36:33
मंगल	मृत्यु	18:35:3	20:5:48
गुरु	यमकंठक	21:36:33	23:7:18
शनि	गुलिक	0:38:3	2:8:48

रेखांश उपगृह

उपग्रह	रेखांश डि : मि :से	राशी	राशी के रेखांश प्रकार डि : मि :से	नक्षत्र	पद
काल	243:24:27	धनु	3:24:27	मूल	2
अर्धप्रहर	156:30:50	कन्या	6:30:50	उत्तर फालगुनी	3
मृत्यु	133:37:34	सिंह	13:37:34	पूर्व फालगुनी	1
यमकंठक	179:23:47	कन्या	29:23:47	चित्रा	2
गुलिक	222:40:56	वृशचिक	12:40:56	अनुराधा	3
परिवेष	93:48:45	कर्क	3:48:45	पुष्य	1
इंद्रचाप	266:11:14	धनु	26:11:14	पूर्वषाढा	4
व्यथिपात	273:48:45	मकर	3:48:45	उत्तरषाढा	3
उपकेतु	282:51:14	मकर	12:51:14	श्रावण	1
धूम	86:11:14	मिथुन	26:11:14	पुर्नवासु	2

नक्षत्राधीपती / नक्षत्राधी सहपती / नक्षत्राधी अनुसहपती तथां उपग्रहों की नामावली।

उपग्रह	नक्षत्र	नक्षत्र का देव	उप स्वामी	उप उप स्वामी
काल	मूल	केतु	रवि	शनि
अर्धप्रहर	उत्तर फालगुनी	रवि	बुध	गुरु
मृत्यु	पूर्व फालगुनी	शुक्र	शुक्र	शुक्र
यमकंठक	चित्रा	मंगल	शनि	मंगल
गुलिक	अनुराधा	शनि	मंगल	शुक्र
परिवेष	पुष्य	शनि	शनि	बुध
इंद्रचाप	पूर्वषाढा	शुक्र	केतु	मंगल
व्यथिपात	उत्तरषाढा	रवि	शनि	शुक्र
उपकेतु	श्रावण	चन्द्र	राहु	बुध
धूम	पुर्नवासु	गुरु	केतु	राहु

उपग्रह राशी

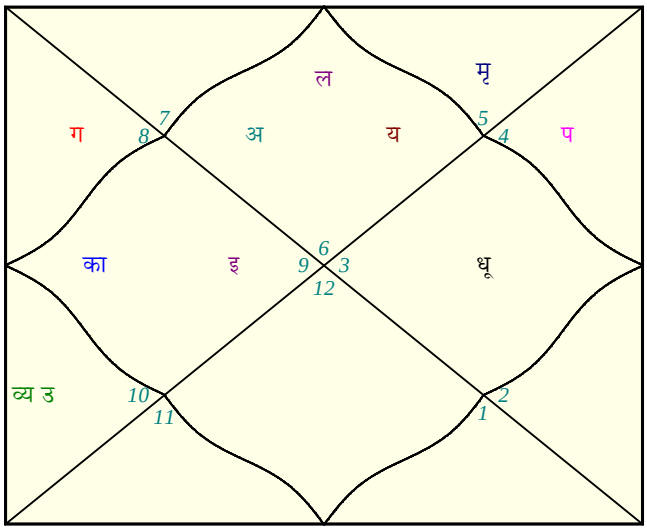

का	उ	काल	अ	उ	अर्धप्रहर
मृ	उ	मृत्यु	य	उ	यमकंठक
ग	उ	गुलिक	प	उ	परिवेष
इ	उ	इंद्रचाप	व्य	उ	व्यथिपात
उ	उ	उपकेतु	धू	उ	धूम

भाव कुंडली

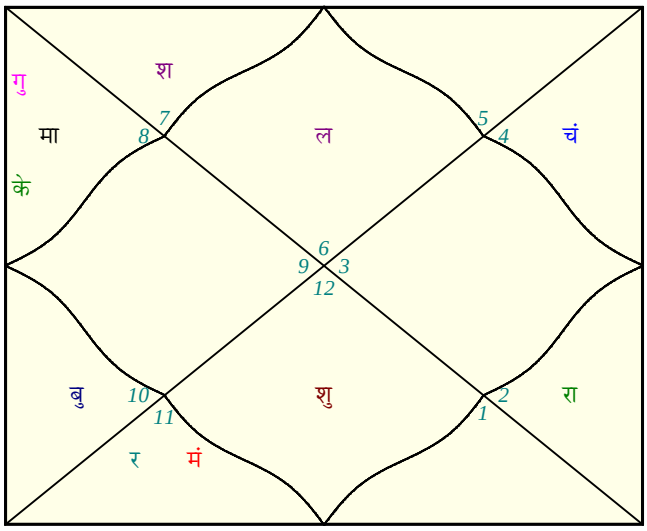

भाव टेबुल

भाव	आरंभ (प्रारंभ) डिग्रि:मिनिट:सेकेन्ड	मध्य (मध्य) डिग्रि:मिनिट:सेकेन्ड	अन्तिम (अंत) डिग्रि:मिनिट:सेकेन्ड	गृहों भाव में उपस्थित है
1	158:45:7	174:0:13	188:45:7	
2	188:45:7	203:30:0	218:14:53	श
3	218:14:53	232:59:47	247:44:40	गु,के,मा
4	247:44:40	262:29:34	277:44:40	
5	277:44:40	292:59:47	308:14:53	बु
6	308:14:53	323:30:0	338:45:7	र,मं
7	338:45:7	354:0:13	8:45:7	शु
8	8:45:7	23:30:0	38:14:53	
9	38:14:53	52:59:47	67:44:40	रा
10	67:44:40	82:29:34	97:44:40	
11	97:44:40	112:59:47	128:14:53	चं
12	128:14:53	143:30:0	158:45:7	

षोढसवर्गा अधिपति

	ल	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	रा	के	मा
राशी	बु	^चं	~श	=श	=गु	+गु	+मं	+शु	+बु	+गु	मं
औरा	र	+र	^र	+र	~चं	+चं	+र	~र	~र	+र	र
द्रिख्खन	शु	=मं	=बु	^बु	=गु	+गु	^गु	^श	+बु	+गु	चं
चतूथांश	बु	=श	~शु	~चं	+बु	+गु	~शु	^श	+बु	+गु	र
सप्तांश	र	=शु	+मं	=गु	=मं	=शु	+र	=गु	=चं	~श	मं
नवांश	र	=गु	~श	~चं	+बु	~बु	+मं	^श	~गु	~बु	गु
दशांश	श	+बु	=बु	=मं	+श	=श	^गु	^श	~र	~श	मं
व्दादशांश	बु	=श	+चं	^बु	+बु	=शु	~शु	^श	~र	~श	शु
सोडांश	गु	=श	~श	=गु	^शु	+गु	+मं	+बु	~गु	+गु	मं
विंशाम्स	गु	=मं	^र	^बु	+श	+गु	~शु	~मं	~गु	+गु	चं
चतुर्विंशाम्स	श	=शु	=बु	=गु	+श	+गु	+चं	~मं	+श	~श	बु
भम्श	मं	=शु	=बु	=श	+बु	+चं	^गु	~चं	=मं	=शु	गु
त्रिंमशांश	श	=गु	+गु	=श	+बु	~बु	^गु	=गु	+श	~श	मं
खवेदांश	बु	=मं	=बु	=श	=मं	+चं	+चं	+बु	+श	~श	श
	गु	+र	+गु	=गु	+श	=शु	+चं	~र	+शु	=शु	गु
शष्टियांश	बु	+र	+गु	+र	^शु	^मं	~बु	~चं	~र	~श	बु

^ अपना वर्ग + क़्ध्द्रत्ड्डदड्डथ्न् = निश्पक्षीय ~ शत्रु

षोढ़सवर्ग चार्ट

राशी[D1]

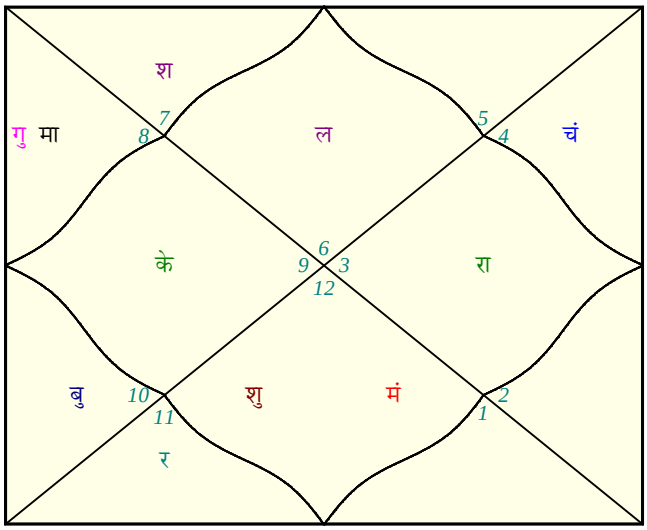

औरा[D2]

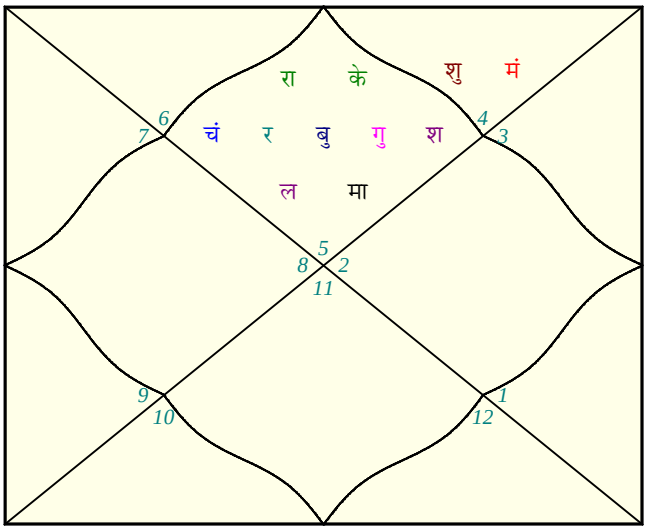

द्रिख्खन[D3]

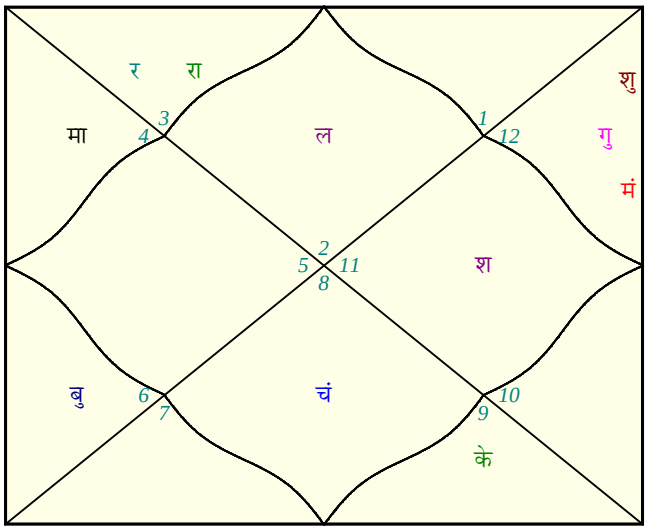

चतूथांश[D4]

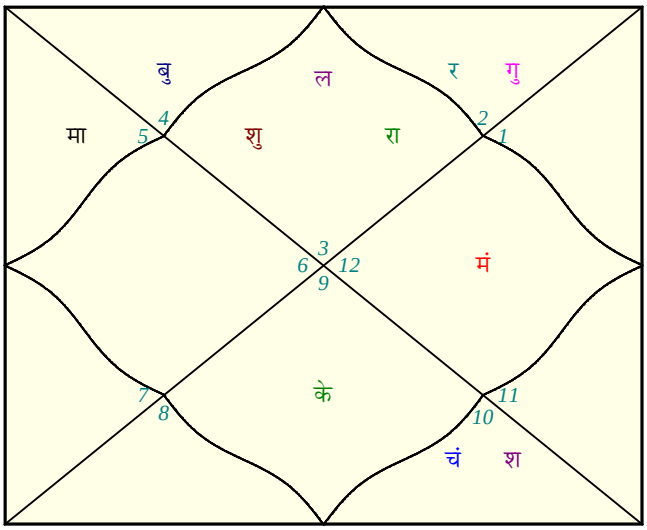

सप्तांश[D7]

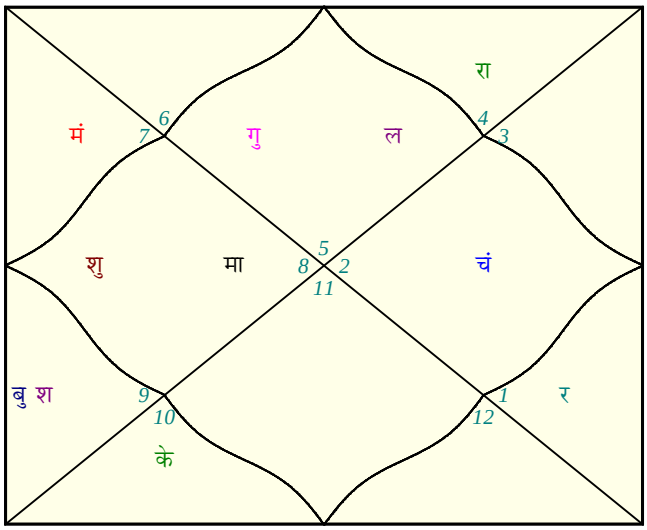

नवांश[D9]

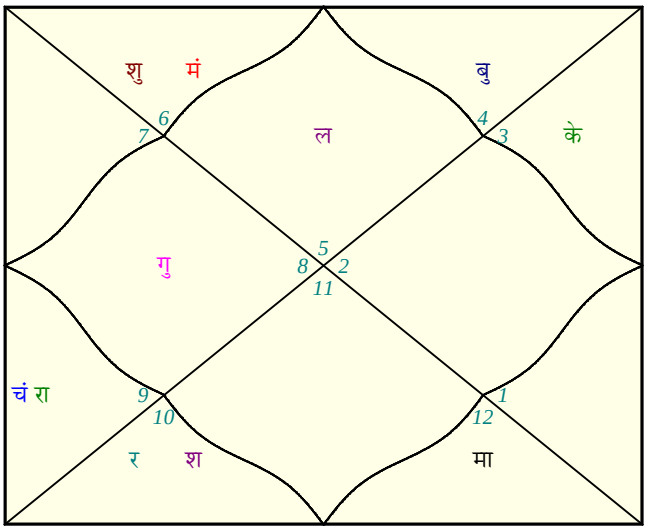

दशांश[D10]

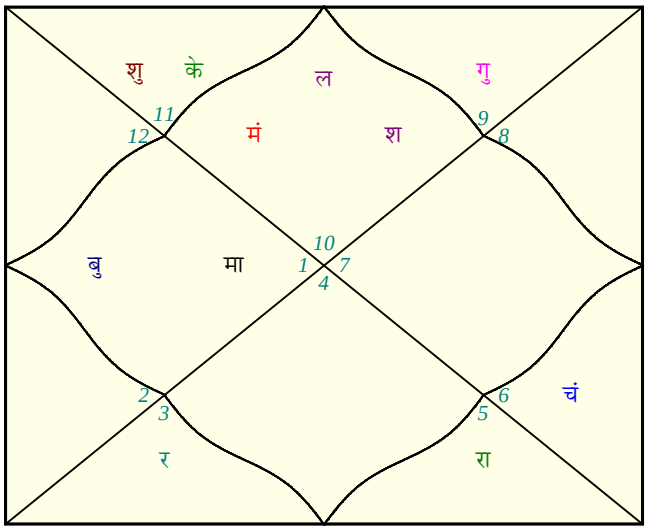

व्दादशांश[D12]

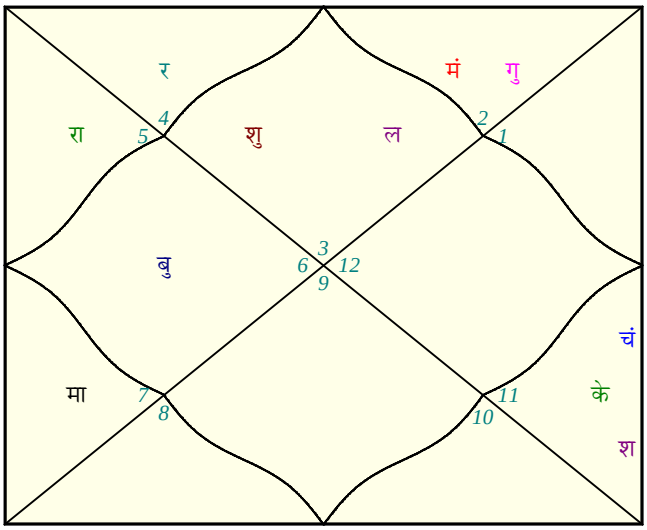

सोडांश[D16]

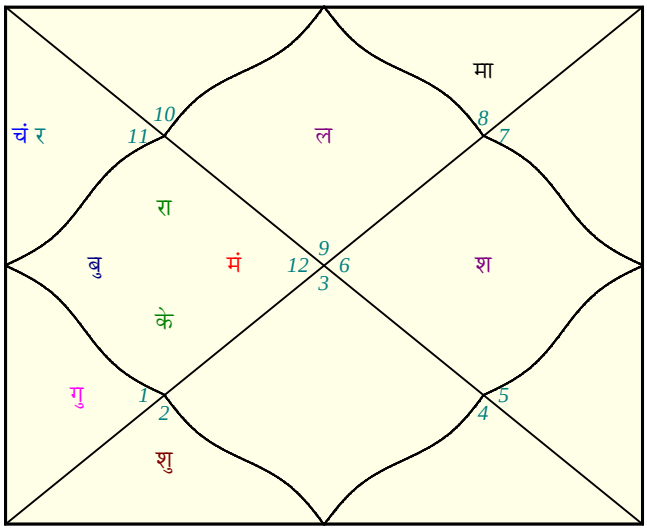

विंशाम्स[D20]

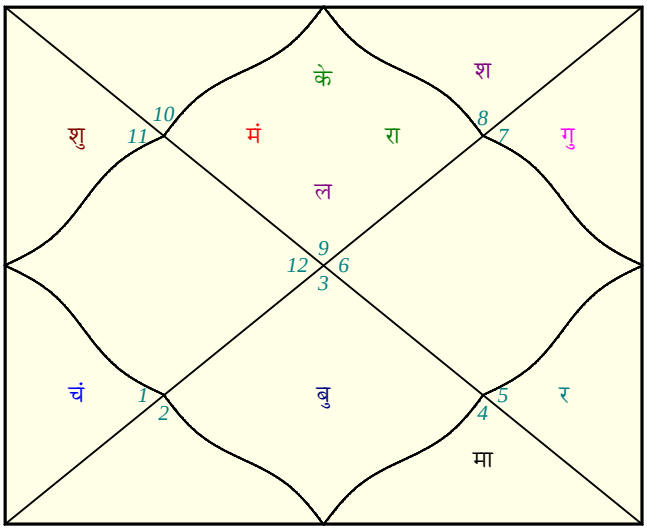

अष्टकवर्ग

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	सभी मिलाकार
मेष	4	4	6	2	4	4	1	25
वृषभ	5	4	4	6	3	5	3	30
मिथुन	3	4	7	5	5	4	2	30
कर्क	6	3	4	6	3	2	2	26
सिंह	5	4	2	4	3	4	5	27
कन्या	4	6	4	5	4	6	5	34
तुला	2	4	8	3	4	4	2	27
वृशचिक	6	5	4	5	3	5	3	31
धनु	5	5	5	4	3	6	6	34
मकर	4	2	5	5	3	6	2	27
कुंम्भ	3	3	2	3	2	5	5	23
मीन	2	4	3	4	2	5	3	23
	49	48	54	52	39	56	39	337

अष्टकवर्ग कुंडलियाँ

चन्द्र अष्टकवर्ग 49

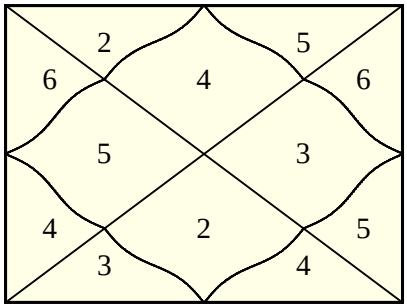

रवि अष्टकवर्ग 48

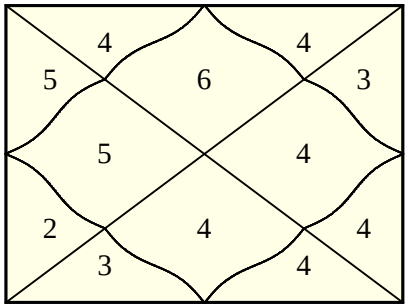

बुध अष्टकवर्ग 54

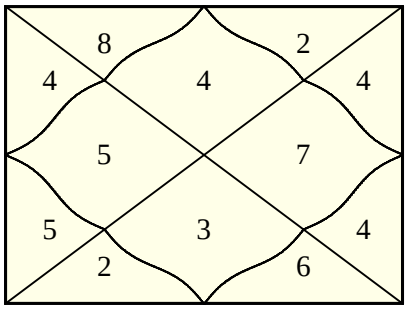

शुक्र अष्टकवर्ग 52

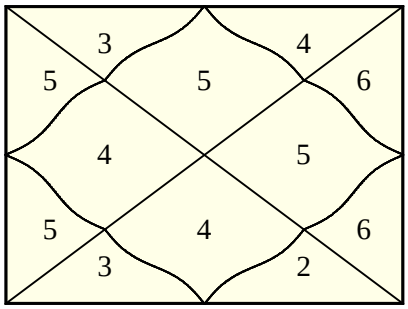

मंगल अष्टकवर्ग 39

गुरु अष्टकवर्ग 56

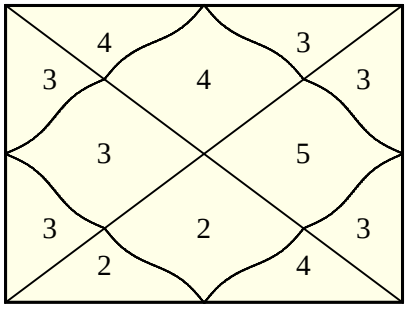

शनि अष्टकवर्ग 39

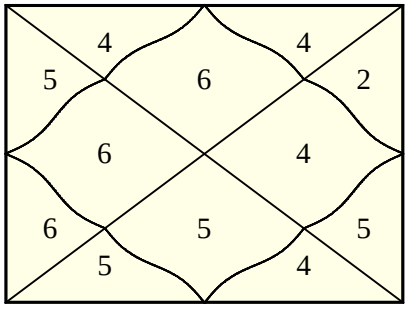

सर्व अष्टकवर्ग 337

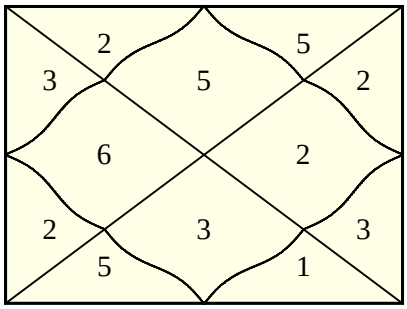

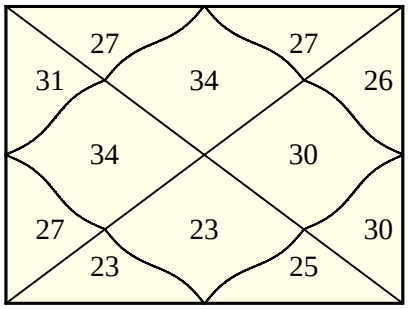

अष्टकवर्ग - त्रिकोण कम होना

चन्द्र अष्टकवर्ग 13

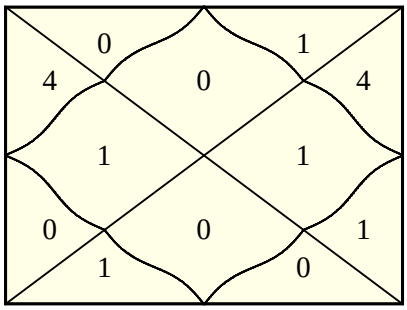

बुध अष्टकवर्ग 21

रवि अष्टकवर्ग 12

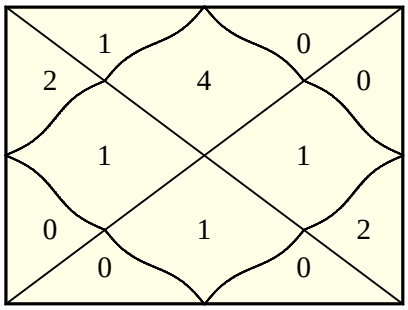

शुक्र अष्टकवर्ग 10

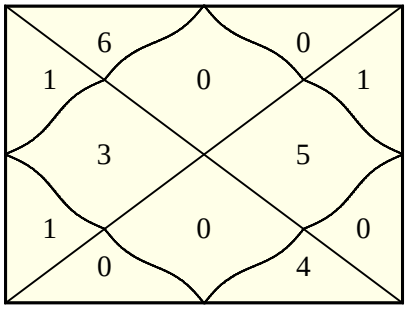

मंगल अष्टकवर्ग 9

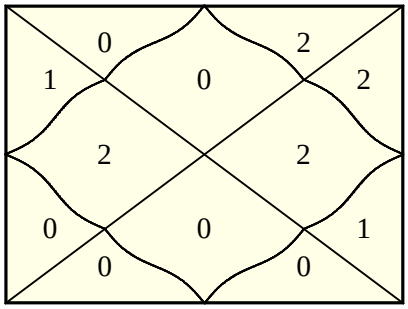

गुरु अष्टकवर्ग 11

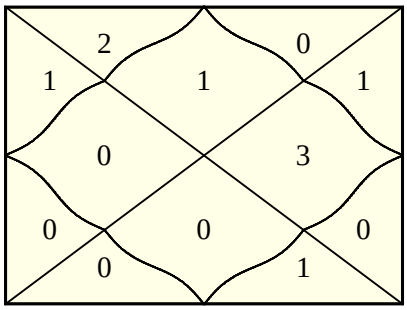

शनि अष्टकवर्ग 18

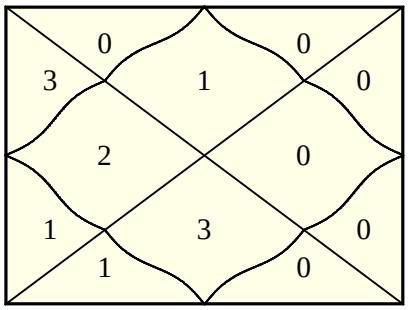

सर्व अष्टकवर्ग 94

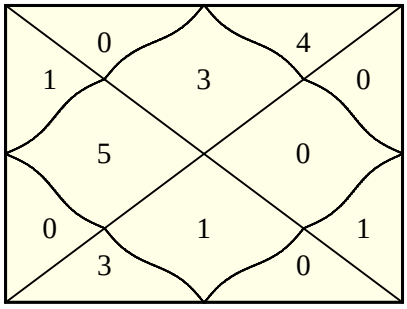

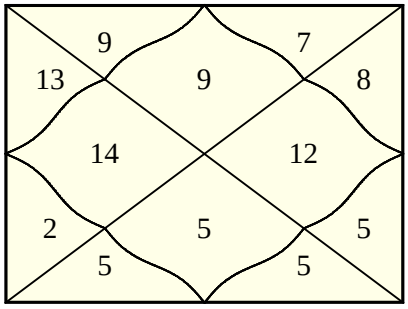

अष्टकवर्ग - एकाधिपती कम होना

चन्द्र अष्टकवर्ग 13

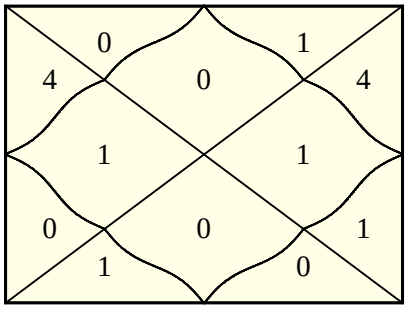

रवि अष्टकवर्ग 10

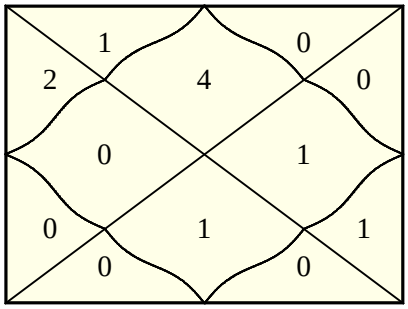

बुध अष्टकवर्ग 18

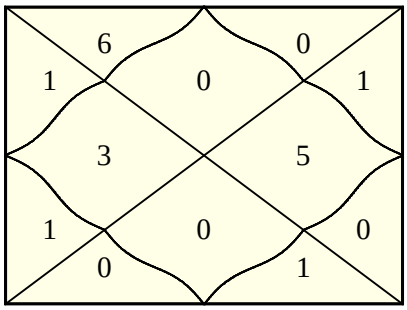

शुक्र अष्टकवर्ग 10

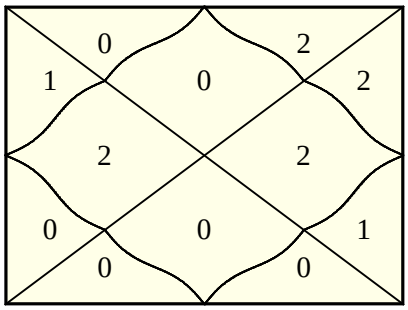

मंगल अष्टकवर्ग 8

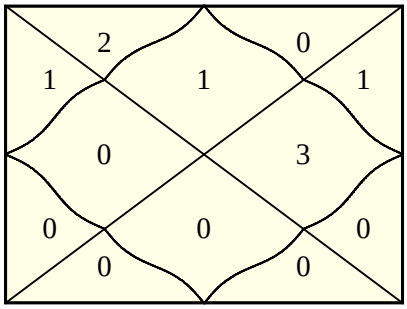

गुरु अष्टकवर्ग 9

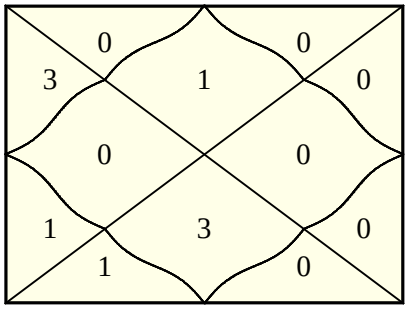

शनि अष्टकवर्ग 14

सर्व अष्टकवर्ग 82

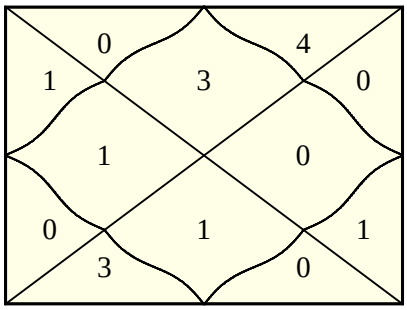

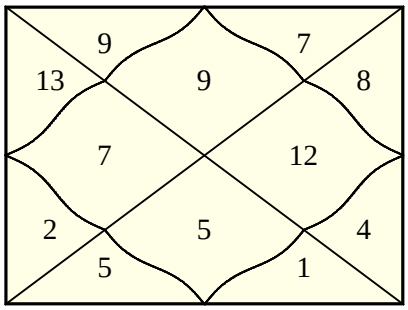

विंषोत्तरी दशा का सेक्षिप्त विवरण

ष्ड्डुह्मण्प दाश शुरुआत का उम्र (वर्ष : मास :दिवस) (YY:MM:DD)

केतु ऊ14:03:03 शुक्र ऊ21:03:02 रवि ऊ41:03:02
चन्द्र ऊ47:03:03 मंगल ऊ57:03:02 राहु ऊ64:03:03
गुरु ऊ82:03:03

दशा और भुक्ती का विवरण काल

(साल = 365.25 दिन)
जन्म के समय दशा की समतुलना = बुध 14 साल, 3 महीने, 0 दिन

दशा	भुक्ती	आरंभ	अन्तिम
बुध	केतू	25-02-1983	21-10-1983
बुध	शुक्र	21-10-1983	21-08-1986
बुध	सूर्य	21-08-1986	28-06-1987
बुध	चन्द्र	28-06-1987	26-11-1988
बुध	कुज	26-11-1988	23-11-1989
बुध	राहू	23-11-1989	12-06-1992
बुध	गुरु	12-06-1992	17-09-1994
बुध	शनि	17-09-1994	28-05-1997
केतू	केतू	28-05-1997	24-10-1997
केतू	शुक्र	24-10-1997	24-12-1998
केतू	सूर्य	24-12-1998	01-05-1999
केतू	चन्द्र	01-05-1999	30-11-1999
केतू	कुज	30-11-1999	27-04-2000
केतू	राहू	27-04-2000	15-05-2001
केतू	गुरु	15-05-2001	21-04-2002
केतू	शनि	21-04-2002	31-05-2003
केतू	बुध	31-05-2003	27-05-2004
शुक्र	शुक्र	27-05-2004	27-09-2007
शुक्र	सूर्य	27-09-2007	26-09-2008
शुक्र	चन्द्र	26-09-2008	28-05-2010
शुक्र	कुज	28-05-2010	28-07-2011
शुक्र	राहू	28-07-2011	28-07-2014
शुक्र	गुरु	28-07-2014	28-03-2017
शुक्र	शनि	28-03-2017	27-05-2020
शुक्र	बुध	27-05-2020	28-03-2023
शुक्र	केतू	28-03-2023	27-05-2024
सूर्य	सूर्य	27-05-2024	14-09-2024
सूर्य	चन्द्र	14-09-2024	16-03-2025
सूर्य	कुज	16-03-2025	21-07-2025
सूर्य	राहू	21-07-2025	15-06-2026
सूर्य	गुरु	15-06-2026	03-04-2027
सूर्य	शनि	03-04-2027	15-03-2028

सूर्य	बुध	15-03-2028	20-01-2029
सूर्य	केतू	20-01-2029	28-05-2029
सूर्य	शुक्र	28-05-2029	28-05-2030
चन्द्र	चन्द्र	28-05-2030	28-03-2031
चन्द्र	कुज	28-03-2031	27-10-2031
चन्द्र	राहू	27-10-2031	27-04-2033
चन्द्र	गुरु	27-04-2033	27-08-2034
चन्द्र	शनि	27-08-2034	27-03-2036
चन्द्र	बुध	27-03-2036	27-08-2037
चन्द्र	केतू	27-08-2037	28-03-2038
चन्द्र	शुक्र	28-03-2038	27-11-2039
चन्द्र	सूर्य	27-11-2039	27-05-2040
कुज	कुज	27-05-2040	23-10-2040
कुज	राहू	23-10-2040	11-11-2041
कुज	गुरु	11-11-2041	18-10-2042
कुज	शनि	18-10-2042	27-11-2043
कुज	बुध	27-11-2043	23-11-2044
कुज	केतू	23-11-2044	21-04-2045
कुज	शुक्र	21-04-2045	21-06-2046
कुज	सूर्य	21-06-2046	27-10-2046
कुज	चन्द्र	27-10-2046	28-05-2047
राहू	राहू	28-05-2047	07-02-2050
राहू	गुरु	07-02-2050	03-07-2052
राहू	शनि	03-07-2052	10-05-2055
राहू	बुध	10-05-2055	26-11-2057
राहू	केतू	26-11-2057	15-12-2058
राहू	शुक्र	15-12-2058	14-12-2061
राहू	सूर्य	14-12-2061	08-11-2062
राहू	चन्द्र	08-11-2062	09-05-2064
राहू	कुज	09-05-2064	28-05-2065
गुरु	गुरु	28-05-2065	16-07-2067
गुरु	शनि	16-07-2067	26-01-2070
गुरु	बुध	26-01-2070	03-05-2072
गुरु	केतू	03-05-2072	09-04-2073
गुरु	शुक्र	09-04-2073	09-12-2075
गुरु	सूर्य	09-12-2075	26-09-2076
गुरु	चन्द्र	26-09-2076	26-01-2078
गुरु	कुज	26-01-2078	02-01-2079

नीचे खीची गई रेखा, आपके आयुष्य को बताने वाली रेखा नही है।

वर्तमान वर्ष से २५ साल तक पर्यन्तर दशा काल

दशा : शुक्र अपहार : राहु

1.रा	28-07-2011	>> 08-01-2012	**2.गु**	08-01-2012	>> 02-06-2012
3.श	02-06-2012	>> 23-11-2012	**4.बु**	23-11-2012	>> 27-04-2013
5.के	27-04-2013	>> 30-06-2013	**6.शु**	30-06-2013	>> 30-12-2013
7.र	30-12-2013	>> 22-02-2014	**8.चं**	22-02-2014	>> 25-05-2014
9.मं	25-05-2014	>> 28-07-2014			

दशा : शुक्र अपहार : गुरु

1.गु	28-07-2014	>> 05-12-2014	**2.श**	05-12-2014	>> 08-05-2015
3.बु	08-05-2015	>> 23-09-2015	**4.के**	23-09-2015	>> 19-11-2015
5.शु	19-11-2015	>> 29-04-2016	**6.र**	29-04-2016	>> 17-06-2016
7.चं	17-06-2016	>> 06-09-2016	**8.मं**	06-09-2016	>> 02-11-2016
9.रा	02-11-2016	>> 28-03-2017			

दशा : शुक्र अपहार : शनि

1.श	28-03-2017	>> 27-09-2017	**2.बु**	27-09-2017	>> 10-03-2018
3.के	10-03-2018	>> 16-05-2018	**4.शु**	16-05-2018	>> 25-11-2018
5.र	25-11-2018	>> 22-01-2019	**6.चं**	22-01-2019	>> 28-04-2019
7.मं	28-04-2019	>> 05-07-2019	**8.रा**	05-07-2019	>> 25-12-2019
9.गु	25-12-2019	>> 27-05-2020			

दशा : शुक्र अपहार : बुध

1.बु	27-05-2020	>> 21-10-2020	**2.के**	21-10-2020	>> 20-12-2020
3.शु	20-12-2020	>> 11-06-2021	**4.र**	11-06-2021	>> 02-08-2021
5.चं	02-08-2021	>> 27-10-2021	**6.मं**	27-10-2021	>> 26-12-2021
7.रा	26-12-2021	>> 30-05-2022	**8.गु**	30-05-2022	>> 15-10-2022
9.श	15-10-2022	>> 28-03-2023			

दशा : शुक्र अपहार : केतु

1.के	28-03-2023	>> 22-04-2023	**2.शु**	22-04-2023	>> 02-07-2023
3.र	02-07-2023	>> 23-07-2023	**4.चं**	23-07-2023	>> 28-08-2023
5.मं	28-08-2023	>> 22-09-2023	**6.रा**	22-09-2023	>> 25-11-2023
7.गु	25-11-2023	>> 20-01-2024	**8.श**	20-01-2024	>> 28-03-2024
9.बु	28-03-2024	>> 27-05-2024			

दशा : रवि अपहार : रवि

1.र	27-05-2024	>> 02-06-2024	**2.चं**	02-06-2024	>> 11-06-2024
3.मं	11-06-2024	>> 17-06-2024	**4.रा**	17-06-2024	>> 04-07-2024
5.गु	04-07-2024	>> 18-07-2024	**6.श**	18-07-2024	>> 05-08-2024
7.बु	05-08-2024	>> 20-08-2024	**8.के**	20-08-2024	>> 27-08-2024
9.शु	27-08-2024	>> 14-09-2024			

दशा : रवि अपहार : चन्द्र

1.चं	14-09-2024	>> 29-09-2024	**2.मं**	29-09-2024	>> 10-10-2024
3.रा	10-10-2024	>> 06-11-2024	**4.गु**	06-11-2024	>> 01-12-2024
5.श	01-12-2024	>> 29-12-2024	**6.बु**	29-12-2024	>> 24-01-2025
7.के	24-01-2025	>> 04-02-2025	**8.शु**	04-02-2025	>> 06-03-2025
9.र	06-03-2025	>> 16-03-2025			

दशा : रवि अपहार : मंगल

1.मं	16-03-2025	>> 23-03-2025	**2.रा**	23-03-2025	>> 11-04-2025
3.गु	11-04-2025	>> 28-04-2025	**4.श**	28-04-2025	>> 18-05-2025
5.बु	18-05-2025	>> 06-06-2025	**6.के**	06-06-2025	>> 13-06-2025
7.शु	13-06-2025	>> 04-07-2025	**8.र**	04-07-2025	>> 11-07-2025
9.चं	11-07-2025	>> 21-07-2025			

दशा : रवि अपहार : राहु

1.रा	21-07-2025	>> 09-09-2025	**2.गु**	09-09-2025	>> 23-10-2025
3.श	23-10-2025	>> 14-12-2025	**4.बु**	14-12-2025	>> 29-01-2026
5.के	29-01-2026	>> 17-02-2026	**6.शु**	17-02-2026	>> 13-04-2026
7.र	13-04-2026	>> 30-04-2026	**8.चं**	30-04-2026	>> 27-05-2026
9.मं	27-05-2026	>> 15-06-2026			

दशा : रवि अपहार : गुरु

1.गु	15-06-2026	>> 24-07-2026	**2.श**	24-07-2026	>> 08-09-2026
3.बु	08-09-2026	>> 20-10-2026	**4.के**	20-10-2026	>> 06-11-2026
5.शु	06-11-2026	>> 24-12-2026	**6.र**	24-12-2026	>> 08-01-2027
7.चं	08-01-2027	>> 01-02-2027	**8.मं**	01-02-2027	>> 18-02-2027
9.रा	18-02-2027	>> 03-04-2027			

दशा : रवि अपहार : शनि

1.श	03-04-2027	>> 28-05-2027	**2.बु**	28-05-2027	>> 16-07-2027
3.के	16-07-2027	>> 06-08-2027	**4.शु**	06-08-2027	>> 02-10-2027
5.र	02-10-2027	>> 20-10-2027	**6.चं**	20-10-2027	>> 18-11-2027
7.मं	18-11-2027	>> 08-12-2027	**8.रा**	08-12-2027	>> 29-01-2028
9.गु	29-01-2028	>> 15-03-2028			

दशा : रवि अपहार : बुध

1.बु	15-03-2028	>> 28-04-2028	**2.के**	28-04-2028	>> 16-05-2028
3.शु	16-05-2028	>> 07-07-2028	**4.र**	07-07-2028	>> 23-07-2028
5.चं	23-07-2028	>> 18-08-2028	**6.मं**	18-08-2028	>> 05-09-2028
7.रा	05-09-2028	>> 21-10-2028	**8.गु**	21-10-2028	>> 02-12-2028
9.श	02-12-2028	>> 20-01-2029			

दशा : रवि अपहार : केतु

1.के	20-01-2029	>> 27-01-2029	**2.शु**	27-01-2029	>> 18-02-2029
3.र	18-02-2029	>> 24-02-2029	**4.चं**	24-02-2029	>> 07-03-2029
5.मं	07-03-2029	>> 14-03-2029	**6.रा**	14-03-2029	>> 02-04-2029
7.गु	02-04-2029	>> 19-04-2029	**8.श**	19-04-2029	>> 09-05-2029
9.बु	09-05-2029	>> 28-05-2029			

दशा : रवि अपहार : शुक्र

1.शु	28-05-2029	>> 27-07-2029	**2.र**	27-07-2029	>> 15-08-2029
3.चं	15-08-2029	>> 14-09-2029	**4.मं**	14-09-2029	>> 05-10-2029
5.रा	05-10-2029	>> 29-11-2029	**6.गु**	29-11-2029	>> 17-01-2030
7.श	17-01-2030	>> 16-03-2030	**8.बु**	16-03-2030	>> 07-05-2030
9.के	07-05-2030	>> 28-05-2030			

दशा : चन्द्र अपहार : चन्द्र

1.चं	28-05-2030	>> 22-06-2030	**2.मं**	22-06-2030	>> 10-07-2030
3.रा	10-07-2030	>> 25-08-2030	**4.गु**	25-08-2030	>> 04-10-2030
5.श	04-10-2030	>> 21-11-2030	**6.बु**	21-11-2030	>> 04-01-2031
7.के	04-01-2031	>> 21-01-2031	**8.शु**	21-01-2031	>> 13-03-2031
9.र	13-03-2031	>> 28-03-2031			

दशा : चन्द्र अपहार : मंगल

1.मं	28-03-2031	>> 10-04-2031	**2.रा**	10-04-2031	>> 12-05-2031
3.गु	12-05-2031	>> 09-06-2031	**4.श**	09-06-2031	>> 13-07-2031
5.बु	13-07-2031	>> 12-08-2031	**6.के**	12-08-2031	>> 24-08-2031
7.शु	24-08-2031	>> 29-09-2031	**8.र**	29-09-2031	>> 10-10-2031
9.चं	10-10-2031	>> 27-10-2031			

दशा : चन्द्र अपहार : राहु

1.रा	27-10-2031	>> 17-01-2032	**2.गु**	17-01-2032	>> 31-03-2032
3.श	31-03-2032	>> 25-06-2032	**4.बु**	25-06-2032	>> 11-09-2032
5.के	11-09-2032	>> 13-10-2032	**6.शु**	13-10-2032	>> 12-01-2033
7.र	12-01-2033	>> 09-02-2033	**8.चं**	09-02-2033	>> 26-03-2033
9.मं	26-03-2033	>> 27-04-2033			

दशा : चन्द्र अपहार : गुरु

1.गु	27-04-2033	>> 01-07-2033	**2.श**	01-07-2033	>> 16-09-2033
3.बु	16-09-2033	>> 24-11-2033	**4.के**	24-11-2033	>> 23-12-2033
5.शु	23-12-2033	>> 14-03-2034	**6.र**	14-03-2034	>> 07-04-2034
7.चं	07-04-2034	>> 18-05-2034	**8.मं**	18-05-2034	>> 15-06-2034
9.रा	15-06-2034	>> 27-08-2034			

दशा : चन्द्र अपहार : शनि

1.श	27-08-2034	>> 27-11-2034	**2.बु**	27-11-2034	>> 17-02-2035
3.के	17-02-2035	>> 22-03-2035	**4.शु**	22-03-2035	>> 27-06-2035
5.र	27-06-2035	>> 26-07-2035	**6.चं**	26-07-2035	>> 12-09-2035
7.मं	12-09-2035	>> 16-10-2035	**8.रा**	16-10-2035	>> 10-01-2036
9.गु	10-01-2036	>> 27-03-2036			

दशा : चन्द्र अपहार : बुध

1.बु	27-03-2036	>> 09-06-2036	**2.के**	09-06-2036	>> 09-07-2036
3.शु	09-07-2036	>> 03-10-2036	**4.र**	03-10-2036	>> 29-10-2036
5.चं	29-10-2036	>> 11-12-2036	**6.मं**	11-12-2036	>> 10-01-2037
7.रा	10-01-2037	>> 29-03-2037	**8.गु**	29-03-2037	>> 06-06-2037
9.श	06-06-2037	>> 27-08-2037			

दशा : चन्द्र अपहार : केतु

1.के	27-08-2037	>> 08-09-2037	**2.शु**	08-09-2037	>> 14-10-2037
3.र	14-10-2037	>> 24-10-2037	**4.चं**	24-10-2037	>> 11-11-2037
5.मं	11-11-2037	>> 24-11-2037	**6.रा**	24-11-2037	>> 26-12-2037
7.गु	26-12-2037	>> 23-01-2038	**8.श**	23-01-2038	>> 26-02-2038
9.बु	26-02-2038	>> 28-03-2038			

दशा : चन्द्र अपहार : शुक्र

1.शु	28-03-2038	>> 07-07-2038	**2.र**	07-07-2038	>> 07-08-2038
3.चं	07-08-2038	>> 27-09-2038	**4.मं**	27-09-2038	>> 01-11-2038
5.रा	01-11-2038	>> 31-01-2039	**6.गु**	31-01-2039	>> 23-04-2039
7.श	23-04-2039	>> 28-07-2039	**8.बु**	28-07-2039	>> 22-10-2039
9.के	22-10-2039	>> 27-11-2039			

गृहों के स्थिती का संशोधन

गृहस्थान के स्वामी

प्रथम	भाव के स्वामी	(केन्द्र)	: बुध
दूसरा	,,	(पनप्र)	: शुक्र
तिसरा	,,	(अपोक्लीमा)	: मंगल
चौथा	,,	(केन्द्र)	: गुरु
पंचम	,,	(त्रीकोण)	: शनि
छठ्ठा	,,	(अपोक्लीमा)	: शनि
सातवँ	,,	(केन्द्र)	: गुरु
आठवाँ	,,	(पनप्र)	: मंगल
नवमा	,,	(त्रीकोण)	: शुक्र
दशावाँ	,,	(केन्द्र)	: बुध
अग्यारवाँ	,,	(पनप्र)	: चन्द्र
बारहवाँ	,,	(अपोक्लीमा)	: रवि

गृहों का योग

शुक्र	प्रभावित होता है	मंगल
मंगल	प्रभावित होता है	शुक्र

एक गृह से दूसरे गृह की अपेक्षा से

चन्द्र	अपेक्षित बुध
बुध	अपेक्षित चन्द्र
शुक्र	अपेक्षित लग्न
मंगल	अपेक्षित शनि,राहु,लग्न
गुरु	अपेक्षित चन्द्र,शुक्र,मंगल
शनि	अपेक्षित चन्द्र,केतु

गृह और उसके स्थान की अपेक्षा से

चन्द्र	अपेक्षित पंचम
रवि	अपेक्षित बारहवाँ
बुध	अपेक्षित अग्यारवाँ
शुक्र	अपेक्षित प्रथम
मंगल	अपेक्षित प्रथम,दूसरा,दशावाँ
गुरु	अपेक्षित सातवँ,नवमा,अग्यारवाँ
शनि	अपेक्षित चौथा,आठवाँ,अग्यारवाँ

लाभदाई और अपशकुनिय गृहों से

गुरु, शुक्र और चंन्द्र नैसर्गीक पक्षबल के लाभदाई होते हैं.शुक्लपक्ष के शष्ठी तिथि से लेकर कृष्णपक्ष के शष्ठी तिथि तक चन्द्र को पक्षबल

उपलब्ध रहतै है

आपकी जन्मपत्रिका में चन्द्र पक्षबल से उपलब्ध है और वह अति लाभदाई भी है।

बुध जब अमंगल तत्वों के संयोग में आता है तो वह ओर भी अमंगल और उद्‌वेग उत्पन्न करने वाला गृह हो जाता है

लेकिन आपकी कुडली में बुध अशुभ गृहों से संगति नहि करता

चन्द्र	-	शुभदाई
रवि	-	अशुभकर्ता
बुध	-	शुभदाई
शुक्र	-	शुभदाई
मंगल	-	अशुभकर्ता
गुरु	-	शुभदाई
शनि	-	अशुभकर्ता
राहु	-	अशुभकर्ता
केतु	-	अशुभकर्ता

अशुभ और शुभ फल निरूपण

गृहों से उत्पन्न होने वाले शुभ-अशुभ फलों का निर्णय कुंडलि के स्थानिक स्वामी पर रहतै है। अलग अलग स्थान पर उसका अलग प्रभाव रहता है।
कुंडली में प्रथम स्थान, पांचवा स्थान और नवमाँ स्थान सदा लाभदाई और मंगलमय रहता है।

साधारण दृष्टी से अशुभ गृह चौथे, सातवें और दसवें स्थान के स्वामीत्व को प्राप्त करता है, तब वह लाभदाई और मंगलकारी बनता है।

तीसरे, छठ्ठे और अग्यारवें स्थान के स्वामी अशुभ और अमंगलकारी माने जाते हैं।

साधारण दृष्टी से शुभ गृह चौथे, सातवें और दसवें स्थान के सेवामीत्व को प्राप्त करते है, तब वह अशुभकारी और अमंगलमयी बनते हैं। यह केन्द्राधीपती के दोष के कारण उत्पन्न होनेवाली स्थिती हैं।

दूसरे, आठवें और बारहवें, कुंडली के स्थानीय स्वामी निष्पक्ष प्रकार के या शुभ-अशुभ दोनों से भिन्न प्रकार के फल देने वाले होते हैं।

सूर्य और चन्द्र के छोडकर अन्य सभी गृह, कुंडली में दो स्थानों के स्वामीत्व को स्वीकार करते हैं। उनके समूल प्रत्याधात और प्रभाव को सुश्मता से देखना पडता है।

शास्त्रोक्त ग्रंन्थों से पता चलता है कि आठवे स्थान का निरुपण कुंडली के अन्य संथानों पर रहे गृह स्वामी के विश्लेषण पर अधारित है।

गृह	स्वामीत्व	स्वभाव
चन्द्र	11	अशुभकर्ता
रवि	12	निश्पक्षीय
बुध	1 10	निश्पक्षीय
शुक्र	2 9	शुभदाई
मंगल	3 8	अशुभकर्ता
गुरु	4 7	अशुभकर्ता
शनि	5 6	निश्पक्षीय

नैसर्गीक स्थाई मित्रों की नामावली

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
चं	...	बन्धु	बन्धु	निश्पक्ष	निश्पक्ष	निश्पक्ष	निश्पक्ष
र	बन्धु	...	निश्पक्ष	शत्रु	बन्धु	बन्धु	शत्रु
बु	शत्रु	बन्धु	...	बन्धु	निश्पक्ष	निश्पक्ष	निश्पक्ष
शु	शत्रु	शत्रु	बन्धु	...	निश्पक्ष	निश्पक्ष	बन्धु
मं	बन्धु	बन्धु	शत्रु	निश्पक्ष	...	बन्धु	निश्पक्ष
गु	बन्धु	बन्धु	शत्रु	शत्रु	बन्धु	...	निश्पक्ष
श	शत्रु	शत्रु	बन्धु	बन्धु	शत्रु	निश्पक्ष	...

तात्कालिक मित्रों की नामावली

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
चं	...	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	बन्धु
र	शत्रु	...	बन्धु	बन्धु	बन्धु	बन्धु	शत्रु
बु	शत्रु	बन्धु	...	बन्धु	बन्धु	बन्धु	बन्धु
शु	शत्रु	बन्धु	बन्धु	...	शत्रु	शत्रु	शत्रु
मं	शत्रु	बन्धु	बन्धु	शत्रु	...	शत्रु	शत्रु
गु	शत्रु	बन्धु	बन्धु	शत्रु	शत्रु	...	बन्धु
श	बन्धु	शत्रु	बन्धु	शत्रु	शत्रु	बन्धु	...

पंचदा मित्रों की नामावली

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
चं	...	निश्पक्ष	निश्पक्ष	शत्रु	शत्रु	शत्रु	बन्धु
र	निश्पक्ष	...	बन्धु	निश्पक्ष	अति बन्धु	अति बन्धु	अति शत्रु
बु	अति शत्रु	अति बन्धु	...	अति बन्धु	बन्धु	बन्धु	बन्धु
शु	अति शत्रु	निश्पक्ष	अति बन्धु	...	शत्रु	शत्रु	निश्पक्ष
मं	निश्पक्ष	अति बन्धु	निश्पक्ष	शत्रु	...	निश्पक्ष	शत्रु
गु	निश्पक्ष	अति बन्धु	निश्पक्ष	अति शत्रु	निश्पक्ष	...	बन्धु
श	निश्पक्ष	अति शत्रु	अति बन्धु	निश्पक्ष	अति शत्रु	बन्धु	...

शक्तीबल बतानेवाली नामावली शष्टी अंश के आधारपर (दृकबल)

गृह अपेक्षाकी दृष्टी से अपेक्षित दृष्य गृह

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
शुभ दृष्टी							
चन्द्र	.	47.98	58.62	34.52	35.97	31.46	36.85
बुध	54.50	.	.	9.10	7.65	2.83	20.45
शुक्र	20.96	.	.	.	.	26.94	44.56
गुरु	28.54 30.00	41.95	20.67	33.06	34.51	.	.
शुभ बल	134.00	89.93	79.29	76.68	78.13	61.23	101.86
अशुभ दृष्टी							
रवि	-11.94	.	.	.	.	-13.47	-31.09
मंगल	-18.06	.	.	.	.	-25.49	-43.10 -15.00
शनि	-10.92 -45.00	-27.81	-39.55	-0.89	-3.79	-2.62	.
अशुभ शक्ती	-85.92	-27.81	-39.55	-0.89	-3.79	-41.58	-89.19
दृष्टी पींड	48.08	62.12	39.74	75.79	74.34	19.65	12.67
द्रिक बल	12.02	15.53	9.94	18.95	18.58	4.91	3.17

षड्बल

चं	र	बु	शु	मं	गु	श
उच्च बल						
34.73	40.95	17.81	54.26	47.04	16.36	56.89
सप्तवर्गज बल						
67.50	101.26	129.38	80.63	45.00	121.88	129.38
ओजयुग्मरस्यांश बल						
15.00	15.00	0	30.00	0	0	15.00
केन्द्र बल						
30.00	15.00	30.00	60.00	60.00	15.00	30.00
द्रिखान बल						
0	0	0	0	15.00	0	15.00
संयुक्तस्थान बल						
147.23	172.21	177.19	224.89	167.04	153.24	246.27
संयुक्त दिगबल						
8.78	16.79	20.81	34.24	24.80	42.70	5.55
नतोन्नत बल						
43.08	16.92	60.00	16.92	43.08	16.92	43.08
पक्षबल						
103.98	8.01	51.99	51.99	8.01	51.99	8.01
त्रिभाग बल						
60.00	0	0	0	0	60.00	0
अब्द बल						
15.00	0	0	0	0	0	0
मास बल						
0	0	30.00	0	0	0	0
वर बल						
0	0	0	45.00	0	0	0
होल बल						
0	0	0	60.00	0	0	0
आयान बल						
8.29	36.84	50.80	31.71	30.25	2.22	46.43
युध्ध बल						
0	0	0	0	0	0	0
संयुक्त काल बल						
230.35	61.77	192.79	205.62	81.34	131.13	97.52
संयुक्त चेष्टाबल						
0	0	14.50	18.86	9.98	29.39	42.34
संयुक्त नैसर्गीक बल						
51.43	60.00	25.70	42.85	17.14	34.28	8.57
संयुक्त द्रिकबल						
12.02	15.53	9.94	18.95	18.58	4.91	3.17
संपूर्ण षड्बल						
449.81	326.30	440.93	545.41	318.88	395.65	403.42

षाढबाला संक्षिप्त टेबुल

चं	र	बु	शु	मं	गु	श
संपूर्ण षड्बल						
449.81	326.30	440.93	545.41	318.88	395.65	403.42
संपूर्ण शडबल (रूप)						
7.50	5.44	7.35	9.09	5.31	6.59	6.72
मौलीक ज़रूरतें						
6.00	5.00	7.00	5.50	5.00	6.50	5.00
षडबल अनुपात						
1.25	1.09	1.05	1.65	1.06	1.01	1.34
संबन्धी स्थानक						
3	4	6	1	5	7	2

इष्टफल, कष्टफल की नामावली

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
इष्टफल	42.49	30.12	16.07	31.99	21.67	21.93	49.08
कष्टफल	14.23	26.85	43.81	15.37	25.46	36.55	7.41

भावापेक्षीत बलवंत स्थिती की यादी (नामावली) शष्टीआंशमें

बुध गृह का प्रकृति संयोग से निश्चित किया जाता है ।

गृह अपेक्षाकी दृष्टी से भावमध्य की अपेक्षा से गृहों का द्रष्यभाव

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
शुभ दृष्टी											
चन्द्र											
5.05	10.67	6.46	1.84	14.48	10.67	6.85	3.17	.	.	.	0.59
बुध											
28.79	14.04	.	.	.	0.96	17.43	44.04	28.58	1.84	59.29	44.04
शुक्र											
13.22	9.54	5.85	2.16	.	.	.	1.72	7.05	9.66	4.20	6.86
गुरु											
.	.	.	3.29	22.09	41.20	21.90 30.00	15.19	56.45	41.71	26.45 30.00	11.20

शुभ बल

47.06	34.25	12.31	7.29	36.57	52.83	76.18	64.12	92.08	53.21	119.94	62.69

अशुभ दृष्टी

रवि

-9.86	-6.17	-2.48	.	.	.	-1.39	-6.41	-9.98	-5.09	-5.07	-13.67

मंगल

-12.86	-9.17 -3.75	-5.49	-1.80	.	.	.	-2.08	-7.78	-9.30 -3.75	-3.47	-8.31

शनि

.	.	-1.54	-6.71 -11.25	-9.71	-4.29	-6.67	-13.40	-9.71	-6.02	-2.21 -11.25	.

अशुभ शक्ती

-22.72	-19.09	-9.51	-19.76	-9.71	-4.29	-8.06	-21.89	-27.47	-24.16	-22.00	-21.98

दृष्टी पींड / द्रिक बल

24.34	15.16	2.80	-12.47	26.86	48.54	68.12	42.23	64.61	29.05	97.94	40.71

भावबल की यादी

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
भावाधीपती का बल											
440.93	545.41	318.88	395.65	403.42	403.42	395.65	318.88	545.41	440.93	449.81	326.30
भावद्रिगबल											
60.00	50.00	20.00	0	50.00	10.00	30.00	40.00	50.00	30.00	10.00	40.00
भावद्रिष्टीबल											
24.34	15.16	2.80	-12.47	26.86	48.54	68.12	42.23	64.61	29.05	97.94	40.71
संपूर्ण भावबल											
525.27	610.57	341.68	383.18	480.28	461.96	493.77	401.11	660.02	499.98	557.75	407.01
भावबल के रुप											
8.75	10.18	5.69	6.39	8.00	7.70	8.23	6.69	11.00	8.33	9.30	6.78
संबन्धी स्थानक											
4	2	12	11	7	8	6	10	1	5	3	9

कुजदोष

जन्मपत्रिका में मंगल के प्रभाव को महत्वपूर्ण द्रष्टी से देखा जाता है। मंगल या कुज विवाह संबन्धी कार्यों पर अपना प्रभाव डालने वाला होता है। जब मंगल जन्मकुंडली के सातवें या आठवें स्थान पर रहता है तो अमंगलकारी या दोषयुक्त माना जाता है। शास्त्रोक्त ग्रन्थों के आधार से यह पता चलता है कि सातवें या आठवें स्थान पर रहते हुए मंगल, दोष ग्रस्त होकर भी उसका प्रभाव खास कारण से क्षीण हो जाता है या अप्रिय हो जाता है। कुज दोष या मंगलदोष को समझने के लिये यहाँ विस्त्रित रूप से विश्लेषण किया गया है। निम्न लिखित बातों से पता चलता है कि आपकी जन्मपत्रिका में मंगल किस प्रकार शुभ-अशुभ फल उत्पन्न करता है।

इस जन्मपत्रिका में मंगल, जन्म कुंडली में सातवँ स्थानपर रहा है।

यह स्थिती दोषपूर्ण है।

जन्मकुंडली में लग्न स्थान की अपेक्षा मंगलदोष का विश्लेशण किया गया है।

इस जन्मकुंडली में मंगल का दोष दिखाई देता है।

मौढय स्थिती का विवरण।

जब कोई गृह सूर्य के निकट आता है तब वह मौढ्य स्थिती प्राप्त करता है। मौढ्य दशा में गृह अशुभकारी स्थिती उत्पन्न करता है।

इस जन्मकुंडली में कोई भी गृह मौढ्य स्थिती में नही है।

ग्रहयुध्ध

सूर्य और चन्द्र के सिवा अन्यग्रह जब भी एक रेखांश से ज्यादा समीप आते हैं तो ठग्रहयुध्ध' की स्थिती पैदा होती है। ग्रहयुध्ध में जय-पराजय के बारे में अलग-अलग विचार धार बनी रही है। उसकी एक झलक इस प्रकार है।
अन्य के बिच उत्तर दिशा की ओर रहे ग्रह विजई बनते हैं।

इस जन्मकुंडली में कोई भी ग्रहयुध्ध में झुटा नहि है।

उत्थान, क्षीण, मौढ्य, युध्ध और वक्र स्थिती का संक्षिप्त विवरण।

गृह	श्रेष्ठतम स्थिती।/ क्षीण या नाजुक स्थिती	संयोजन	ग्रहयुध्ध	विपरीत परिस्थिती	बालादि अवस्था
चं					कुमारावस्था
र					युवावस्था
बु					कुमारावस्था
शु	श्रेष्ट समय				वृदावस्था
मं					वृदावस्था
गु					युवावस्था
श	श्रेष्ट समय			विपरीत परिस्थिती	कुमारावस्था

खास प्रकार का ग्रहों के बीच रहा संयोग

जन्म कुंडली में गृहों के मुख्य प्रकार के संयोजन से उत्पन्न होनेवाली स्थिति को योग कहते हैं। योग व्यक्ति के जीवन प्रवाह और भविष्य को असर करने वाला होता है। कुछ योग गृहों के साधारण मिलने या संयोजन से उत्पन्न होते हैं। लेकिन विशेष, दूसरे योग जो हैं वह गृहों के कुछ खास प्रकार के संयोजन अथवा जन्मकुंडली में स्थान गृहण करने से उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार के सैकडों मिलन, संयोजन योग इत्यादी के विवरण पुरातन ज्योतिष शास्त्र के ग्रन्थों में दिये गये हैं। कुछ संयोजन से उत्पन्न होने वाले योग लाभदायी रहते है तो कुछ से हानि अथवा अशुभकारी फलों की प्राप्ति होती है।

आपकी जन्म पत्रिका में कुछ मुख्य महत्वपूर्ण गृहों से उत्पन्न होनेवाले योगों का विवरण यहाँ दिया गया है।

मालव्ययोग

लक्षण:
केन्द्रस्थान मे शुक्र उच्च स्थान पर।

मालव्य योग के कारण आपका जीवन आनन्दमय और धन्य रहेगा। आपका तन मन और चिंतन निर्मलता से भरा है। आप आपके निर्मल मन के कारण सहज ही दूसरों के आकर्षण का आप केन्द्र बन पायेंगे। श्रेष्ठ कार्यों से लाभमय फल
प्राप्ति सुनिश्चित है। इच्छानुसार प्रेमपूर्ण वातावरण का सृजन करने में निपुण हैं। वाहन योग का भाग्य प्राप्त है। कलाकृति और विनोदमय कार्यों के आप रसिक हैं। आप मधुरभाषी हैं। सन्तान का सुख भी आपको प्राप्त है। जीवन में लगभग ८५ साल की आयु उपलब्ध है। नृत्य व गायन में रुचि होगा। महिलाओं का अधिक सान्निध्य अपयश कारक हो सकता है। सतर्क रहें।

सदसन्चार योग

लक्षण:
लग्नाधीपती चनायमान राशी में रहै है।

आप सदा सक्रिय और चलायमान हैं। आपके कार्य क्षेत्र में सफर ज़्यादा रहेगा। आप अपने निर्धारित लक्ष्य को सदा ध्यान में रखें ताकि आप कहीं भटक न जायें।

मात्रुमूलधन योग

लक्षण:
दूसरे स्थान का स्वामी चतुर्थस्थान के स्वामीत्व के सहयोग में रहा है।

आपको मातृकृपा के कारण धन संपन्न होगा।

द्विगृह योग

लक्षण:
दो गृह एक ही भाव में स्थापित है ।

शुक्र,मंगल , सातवँ भाव में है ।

दूसरों का स्नेह और विश्वास पाने के लिए किसी भी हत तक जाना चाहिए । किसी अपवात विषयों में शमिल नहीं होना चाहिए । बिना किसी कारण के दूसरों से जगड़ने और अविश्वास रहने की प्रवृत्ति को छोड देना चाहिए । क्योंकि आप हृदय के बहुत अच्छे है आप स्वंय नियंत्रण कर सकते है और दूसरों के अनुमोदन को प्राप्त कर सकते है ।

नाम : Sinto Placid [पुरुष]

जन्म नक्षत्र : आशलेष

आपका जन्म नक्षत्र आश्लेषा है। आप अनुशासित होने के कारण जीवन के सभी क्षेत्रों में अनुशासन रखना चाहते हैं। पर आपने कठिन परिश्रम से जो कमाया, उसका पूरा फल प्राप्त करना कठिन रहेगा। आप अप्रसन्न परिस्थितियों तथा मानसिक विषयों को जल्दी भूल सकते हैं। आप सामान्यतः कंजूस हैं और कुछ कार्यों में अतिव्यय करनेवाले हैं। पूर्णरूप से पारिवारिक जीवन का सुख प्राप्त नहीं होगा। जब आप नाराज़ होते हैं तब वातावरण भूलकर मानसिक संयम छोड़ देते हैं। क्रोधावस्था में आप कुछ भी कर सकते हैं। समय समय पर आप शान्त भी होते हैं। चतुर स्वभाव न होने से कई प्रन आ सकते हैं। मानसिकशक्ति, कार्य की कुशलता, स्वतन्त्र चिन्तन आदि कई पौरुषगुण आपके होते है। बातचीत करने में सावधान रहें। अपनी पत्नी का निस्सहकरण तथा अप्रसन्नता के अलावा अन्य कई प्रण आपके सामने आते रहेंगे। आप जान बूछकर किसी को धोखा नहीं देंगे, पर लोग आप पर शंका करते रहेंगे।

आश्लेषा नक्षत्र को जातक सहनशील, व्यसनी, क्रूर-कर्मी, कामुक, धूर्त्त, परस्त्री लोलुप, निरर्थक भ्रमण करनेवाला, जन-पीड़क, बुरे कामों में धन व्यय करनेवाला और अपकारी होता है। यह गंडमूल' संज्ञक नक्षत्र है। इसकी शान्ति करने से अशुभता न्यून हो जाती है।

तिथि : त्रयोदशी

आप ने त्रयोदशी तिथि में जन्म लिया है। सामान्यतः सभी कार्यों में निर्बल रहने की संभावना है। अन्य की अपेक्षा में आप धन का ज़्यादा व्यय करने वाले हैं। इस कारण लोग आप को खर्चालु कहेंगे। सत्यशीलता आप में रहा हुआ नैसर्गिक गुण है। आप नमकहलाल व्यक्ति हैं। आप अन्य दुःखियों को सदा मदद करने की भावना रखते हैं। आप चतुर और शूरवीर हैं।

नित्ययोग : शोभना

शोभन नित्ययोग में जन्म होने से आपको दृश्यकलाओं तथा उनके प्रदर्शन में अधिक रुचि रहेगी। आप सभी वस्तुओं को कलात्मक दृष्टि से देखते हैं। अधिक संपत्ति और सुख आपको प्राप्त होगा। अच्छे संबन्धियों की कमी नहीं रहेगी। आप ताकतवर हैं। आप भाग्यदेव से अनुगृहीत हैं। सुख और संपत्ति आपके चरणों में हाज़िर रहेगी। स्वादिष्ट भोजन के इच्छुक हैं। हर कार्य पूरे मन और उत्साह के साथ करने वाले हैं।

आपके जीवन और व्यवहार पर गृहों के प्रभाव को यह विज्ञापन व्याखा करता है ।इस विज्ञापन में उपस्थित आवृत्ति और विरोध आपके जीवन पर गृहों के परस्पर प्रभाव को सूचित करता है ।

व्यक्तित्व, शारीकि बनावट, सामाजिक स्थिति

जन्मकुण्डली का पहला भाव एक व्यक्ति के व्यक्तित्व, शारीरिक बनावट, सामजिक स्थिति और प्रसिद्धि को सूचित करता है ।

लग्न कन्याराशि में रहने से कफ़ और पित्त के मिश्रण से युक्त स्वास्थ्य प्राप्त होगा। सौन्दर्य से, शारीरिक लावण्य से और आकर्षक वेषभूषा से आप अन्य लोगों के आकर्षण का केन्द्र बनेंगे। कौमार्य से यौवन में कदम रखते-रखते आप में अधिक रूप लावण्य प्रकट होगा। समवयस्क व्यक्तियों को आप अधिक प्रभावित कर सकेंगे। विपरीत योनि के लोगों के प्रति विशेष प्रकार का मनोभाव रखने वाले हैं। आप निर्भय होते हुए भी विपरीत योनि के लोगों के प्रति विद्वेषात्मक स्वभाव प्रगट करनेवाले हैं। अस्थिवेग की संभावना हैं। सतमार्ग से संपत्ति उपार्जन होगी। रेत, पत्थर इत्यादि के माध्यम से और खेती से लाभ की संभावना है। अर्थात् आपके लिए बिल्डिंग मेटेरियल और कृषि से संबन्धित कार्य भी लाभप्रद हो सकते हैं। रक्षा विषयक कामों और छावनी के निकट निवास इत्यादि से भी इन्कार नहीं किया जा सकता। पशुपालन कार्य में अभिरुचि रखनेवाले हैं। स्वयं का जीवन अनुशासन पूर्ण और व्यवस्थित रखने का सदा प्रयास रहता है। २५से २८ वर्ष तक का समय चिरस्मरणीय होगा।

संतान की परवरिश में ज़्यादा ध्यान देना आपके लिए अनिवार्य है। यदि संतान को गुणवान और विद्वान देखना चाहते हैं तो थोड़ा समय उनके लिए निकालें। डराने-धमकाने के बदले प्रेम और अनुरागपूर्ण व्यवहार श्रेष्ठ फल की प्राप्ति दे सकता है। जीवनसाथी से असाधारण कामवासना का अनुभव होगा। आपकी संतान में सौन्दर्य की कमी है ऐसा सोचकर व्यर्थ ही दुःखी होने की आवश्यकता नहीं है। गुण का रूप अधिक स्थायित्व रखता है। जीवनकाल में आप धनवान और श्रीमंत बन पायेंगे। अत्यधिक संपत्ति के मालिक बनेंगे फिर भी कभी-कभी दुःखी होना पड़ेगा। आजीवन काल विदेश या दूरदेश बसने का योग है। विद्या से संबन्धित कार्य में और शिक्षा प्रदान करने के कार्य में एक रस अभिरुचि रखने वाले हैं। आप जन समुदाय के लिए सम्मान और कीर्ति के पात्र बनेंगे। आपका रूप और जीवन दोनों प्रभावशाली दिखाई देंगे। समाज सेवा में अभिरुचि रखने वाले हैं। 'कामातुराणां न भयं न लज्जा' को गलत सिद्ध करने का प्रयत्न ही सम्मान की रक्षा कर सकेगा।

जीवन के पूर्वार्धकाल में आर्थिक उन्नति की बहुत संभावनायें है। खर्च में नियंत्रण अनिवार्य रूप से लाना होगा अन्यथा भविष्य में आर्थिक दुःख आ सकता है। सट्टेबाजी और ऐसे कार्यों से बचना आपके लिए लाभदायी होगा। जीवन के २०,२६,३२,३५,४०,४४ और ५० वाँ वर्ष आपके लिए महत्वपूर्ण होंगे।

लग्नाधिपति पाँचवे स्थान पर हैं। बच्चों के कारण सदा चिंतित रहने के आदि हैं। प्रतिकूल स्थिति में क्रोध को नियंत्रण के आधीन रखना कठिन होगा। उच्च अधिकारियों या बडों से पूरा सहकार प्राप्त होता रहेगा। आप उनके स्नेह और वात्सल्य के पात्र बनेंगे। यह शास्त्र प्रमाण पूरी तरह लागू होगा। 'लग्नो पञ्चमे मानी सुत सौख्यं च मध्यमम्।। प्रथमापत्य नाशच क्रोधी राजप्रवेशकः।।'

क्योंकि लग्न देव दसवी भाव के त्रिकोण राशी में उपस्थित है अपको अच्छा परिणाम मिलेगा ।

क्योंकि मंगल गृह लग्न से प्रभावित है आप दानशील होगों ।

ऐसा देखा जाता है कि आपके जन्मकुण्डली में शुक्र गृह लग्न से प्रभावित है। मनोरजन और फुरसतों के लिए अनावश्यक पैसा और समय खर्च करना आपके लिए दोष है ।

संपत्ति, विध्या क्षेत्र इत्यादि के विषय में।

चतुर्थ भाव, चतुर्थेश कारक और संबन्धित ग्रहों की योग, युतिदृष्टि के माध्यम से संपत्ति विद्या-बुद्धि, माता, भूमि , भवन और वाहन आदि का सूचित करता है। इस पत्रिका में इस विषय का विवरण निम्नांकित है।

आपके जन्मपत्रिका में चौथे भाव का स्वामी तीसरे भाव में स्थित है। आप स्वावलंब से यानी स्वप्रयत्न से उन्नति प्राप्त कर सकते हैं। आप निर्मल और दयाशील हृदय वाले माँ बाप की संतान हैं। उनके सद्‌गुण आप में दिखाई देंगे। परिवार का मान और गौरव का संरक्षण करना आप पसंद करते हैं। स्वास्थ्य को बनाये रखने और रोगों से बचने के लिए सदा जागृत रहना होगा। श्रेष्ठ वैद्यकीय सलाह लाभदायी होगी। रिश्ते के भाई बहन हों तो उनसे मित्रता लाभदायी हो सकता है। इसलिए क्रियाशील रहना होगा। सामाजिक सेवा में रुचि होग। सुख सुविधाओं से भरा जीवन होगा।

चौथे भाव का स्वामी गुरु (बृहस्पति) है। श्रेष्ठ धार्मिक प्रचारक तुल्य लक्ष्यबोध आप में प्रकट हो उठेगा। धर्म गुरु सा सम्मान प्राप्त होगा। आपका व्यक्तित्व विद्यार्थी काल में और सभी कार्यक्षेत्र में सहयोगी बनेगा। आपकी आत्मीयता और स्वाभिमानी स्वभाव आपके मुख्य लक्षण है। एक न्याय मूर्ति के तुल्य समता और समभावपूर्ण व्यवहार आपकी शोभा में ओर भी बढ़ावा देगा। आपकी मानसिक परिपक्वता और निर्णयात्मक शक्ति उल्लेखनीय है।

केतु आपके चौथे भाव में स्थित होने से आपको माता तथा संपत्ति से अलग रहना पड़ेगा। दूर देश की यात्रा करनी पड़ेगी। जिससे आपको अच्छे अनुभव प्राप्त होंगे। जीवनकाल में अप्रत्याशित परिवर्तन का सामना करना होगा। आपको दूसरों के भाग्य के बारे में भविष्य बताने की विशेष शक्ति होगी। इससे किसी योग्यपद पर रहें तो जीवन में उन्नति प्राप्त होगी। 'सदा व्यग्रता च' चिन्ता से छुटकारा पाना कठिन जान पड़ता है। पिता से विशेष सुख की आशा न करना ही लाभप्रद होगा।

वैवाहिक जीवन और सातवें स्थान की ग्रहदशा।

वैवाहिक जीवन से जुड़े हुए गुणदोष का निर्णय, सातवें स्थान, सप्तमेश, सप्तमकारक और अन्य ग्रहों की युति-दृष्टि के आधार पर किया जाता है।

सातवाँ भावाधिपति तीसरे स्थान पर है। पत्नी की इच्छापूर्ति के लिए आप सतत प्रयत्नशील रहने वाले पुरुष हैं। पत्नी की ओर असाधारण निष्ठा और सत्यशीलता प्रकट करने वाले पति हैं। विवाह के पश्चात् जीवन में असाधारण प्रगति उपलब्ध होगी। आपकी सफलता और प्रगति की निमित्त आप अपनी पत्नी के प्रति ज़्यादा झुकने को मजबूर होंगे।

वस्तु, परिधान और आभूषणों में आप अभिरुचि लेने वाले व्यक्ति हैं। नियमों का पालन करने वाले हैं। श्रेष्ठ जीवन के उदाहरण सा प्रतिभाशाली व्यक्तित्व आप में निखर रहा है। क्रय-विक्रय के कार्य में अति निपुण हैं। लेखन कार्य और साहित्य जगत में उच्च स्थान प्राप्त होगा। अनेक प्रयत्न और परिश्रम के फलस्वरूप इच्छित वस्तु धनिक परिवार के बीच प्राप्त होगा । आप अनेक विषयों में अभिरुचि रखते हैं। ज़रूरत आने पर विवेकपूर्ण व्यवहार से हर समस्या का हल निकालने में निपुण हैं।

उत्तर दिशा से श्रेष्ठ जीवन संगिनी प्राप्त होने की संभावना रखते हैं।

शुक्र सातवें स्थान पर है। जिसके प्रति अनुराग होगा, उनसे धनिष्ठ संबन्ध स्थापित होंगे। आप अनुरागी और स्नेह संपन्न पुरुष है। यह सब होते हुए भी कलह कार्य में पड़े तो आप से कोई बुरा नहीं। समर्पण भाव युक्त जीवनसाथी उपलब्ध होगा। आप का जीवनसाथी आपके लिए आत्मीयता प्रकट करने वाली व्यक्ति हैं। पारिवारिक जीवन संतोषपूर्ण रहेगा। खण्डनात्मक कार्यों से दूर रहना आप के लिए अनिवार्य है। दूसरों के मन को जीतने वाले सुन्दर व्यवहार करने वाले पुरुष हैं। जीवन की अपूर्व सफलता और व्यक्तित्व सफलता की चाबी इसी में छिपी है। स्वास्थ्य को बिगाड़नेवाली आदतों से दूर रहें तो अधिक लाभदायक होगा। मादक पदार्थों से बचते रहना ही आपके लिए योग्य होगा।

मंगल सातवें स्थान पर हैं। विवाह कार्य में विलंब या विध्न की संभावनायें हैं। विवाह के बाद पत्नी से प्रेरणा शक्ति प्रदान होगी। अन्य कोई दुरुपयोग न कर बैठे इसका ध्यान रखना आवश्यक है। आपके मन की इष्ट-अनिष्ट इच्छाओं का ठीक जगह पर प्रकट करना होगा।

अन्यथा बाद में पछताना होगा। मानसिक बोझ उठाने का और मानसिक क्लेशों के आधीन होने की संभावनायें रखते हैं। ठीक प्रकार से जागरूक रहना होगा। अन्यथा मानसिक दबाव के अंत में विस्फोटित संजोग उपस्थित हो सकते हैं। आप बुद्धिमान है, फिर भी व्यवहार कुशलता में कच्चे हैं। मन जितना विकल्पों
से भरा रहेगा उतनी ही कार्यशक्ति क्षीण होता जाएगा ।

चन्द्र गुरु के स्वाधीन है। इस कारण आपका वैवाहिक जीवन मंगलमय और सुखद् रहेगा। यह निश्चित है।

शुक्र उच्च स्थान का रहा है। अन्य लोगों की ईर्ष्या से पूर्ण प्रभाव का सामना करने में सहायक रहेगा। अन्य अनेक श्रेष्ठ फलों की प्राप्ति हो सकता है। अनुचित प्रेम संबन्ध अन्ततः हानि प्रद ही सिद्ध होगा।

सातवें स्थान पर गुरु की दृष्टि होने के कारण अनेक दोषपूर्ण फलों में कमी होग । अनेक लाभ भी होंगे।

पेशा

फलदीपिका के श्लोको के अनुसार दसवी भाव व्यापार, श्रेणी था पद, कर्म, जय - विजय, कीर्ति, त्याग, जीविका, आकाश, स्वभाव, गुण, अभिलाषा, चाल था गति और अधिकार को सूचित करता है ।

सरर्वात्त चिन्तामणि के अनुसार ज्योतिषियों को दसवी भाव से काम (उधोग) अधिकार, शक्ति, कीर्ति, वर्षा, विदेश राज्यों में जीवन, त्याग का मनोभाव, सम्मान, आदर, जीविका मार्ग, व्यवसाय या पेशा, को निर्णय करना चाहिए । आपके लिए सूचित किए गए ज्योतिष सम्बधित व्यावसाय और पेशा के अन्तर्दृष्टि को दसवी भाव, उसमें उपस्थित अधिपति, गृह, सूर्य और चन्द्र का स्थान आदि तत्वों के विश्लेषण के द्वारा प्रस्तुत किया गया है ।

आप के जन्मकुण्डली में दसवी भाव के स्वामी को पाँचवे भाव में स्थान दिया है । ब्रिहत्त पारासरा होरा श्लोकों के अनुसार आप विधा के विभिन्न शाखा में कुशल होगा । आप को बेठा होगा ।

दसवी भाव मिथुन राशी है । यह चिनह् शास्त्रीय स्त्री, सम्पादक और जसूस बनाएगा। यह आपको एक ही समय दो उघोगों में काम करने की क्षमता प्रधान करते है । इस चिनह् का विशिष्ट स्वभाव है इसकी ज्ञान शक्ति और प्रतिभा । इस राशी के प्रभाव में आनेवाले लोग बौद्विक काम से सम्बधित होगा । आप स्कूल अध्यापिका, प्रोफेसर, इंजीनियर, किसी कार्य का अधिकारी, भाषान्त विधा, संपादक, संवाददाता, बिक्रेता, पयर्टक को संचालन करने वाला, फोटोग्राफी, खुदरा प्यापारी, आदि क्षेत्रों में अच्छी तरह काम कर सकते है । इजीनियरिगं, निर्वाहन. करार करना, छपाई, डाक सेवा, विधुत, सामाचार माध्यम आदि क्षेत्रों में आप सफल हो सकते है ।

आपके जन्मकुण्ली में राहु दसवी भाव में उपस्थित है।
मन्त्रेसवरा के अनुसार आप प्रसिद्व होगा । आप बच्चे के साथ मिले जोल ज्यादा पसन्द नहीं करते । आपको दूसरो की व्यापार में शमिल होने की झुकाव है । आप निर्भय है । आप महत्व पूर्ण शक्ति शाली पदों पर पहुँचने के लिए काम करेगा । आज जल्दी धन कमाता चाहते है ।

जन्मकुण्डली में उपस्थित गृहों के स्थानों के आदार पर प्रस्तुत किए गए विश्लेषण के अलावा कुछ साधारण विधि नीतियाँ भी जन्म नक्षत्र से प्राप्त कर सकते है । आपके जन्म नक्षत्र से सम्बधित उधोग क्षेत्र निम्नलिखित है ।

बिक्री और विपणन, व्यापार प्रतिनिधिक, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार, संवाददाता,लेखक, ग्रन्थकार, वर्ण और रंग, कातना और बुनावट, कागज़ उत्पन्न, होटल और छात्रावास उन्नत पदाधिकारी रोगियों की देख -रेख करना, अध्यापन, भाषा अनुवाद, व्याख्या करना ।

भाग्योदय, अनुभूतियाँ और पैत्रिक उपलब्धियों का विवरण।

नवमा भावाधिपति सातवें स्थान पर है। विदेशी संपर्क के माध्यम से अनके प्रकार की प्रगति होना संभव है। श्रेष्ठ और अनुयोग्य परिवार से

सौन्दर्यवान कन्या से विवाहित होने का योग प्राप्त है। विदेशी संस्थानों से धन संबन्ध स्थापित करने में पिताजी की स्वाधीन शक्ति आपको लाभदायक होगा होगी। जीवन साथी के माध्यम से भाग्य और धन की वृद्धि होगा।

नवमें भावाधिपति ने श्रेष्ठ स्थानग्रहण किया है। आप अनेक शुभ फलों को प्राप्त करनेवाले हैं। लगातार प्रगति के मार्ग पर बढ़ने का योग है।

नवमा भावाधिपति गुरु (बृहस्पति) के सानिध्य में है। अतः अनेक प्रगति का कारण बन सकता है। भाग्येश आपको अनिष्ठों से बचा सकता है। परिश्रम करने से सफलता प्राप्त होग ।

नवमें भाव पर स्थान ग्रहण किया हुआ बृहस्पति अनेक सुख संपत्ति की प्राप्ती दिलानेवाला है। अनेक अनिष्ठ कारक फलों से मुक्त रखने वाला है।

सफ़ेद या सफ़ेद रंग मिश्रित कपडों को पहनना आप के लिए अच्छा होगा। महत्वपूर्ण संदर्भों में ऐसे कपडों का उपयोग करना लाभदायी होगा। सफेद पत्थर यानी वज्र जडित आभूषण आपके लिए भाग्यपूर्ण रहेगा। शारीरिक और मानसिक दोनों सुख प्राप्त होंगे। हस्तकला कृति के क्षेत्र में प्रगति होगी।

दशा अपहार फल

भारतीय ज्योतिष शास्त्र के अनुसार मानव जीवन को भिन्न दशाओं में विभाजित किया गया है। ग्रहों के स्थान और स्थिति के अनुसार योग और योगों की शक्ति के अनुसार दशा-फल होता है। सत्ताईस नक्षत्रों को तीन तीन के समूह में बांट कर नौ दशाओं में विभाजित किया गया है। इनके अधिकार के समय को दशा कहते हैं। बच्चों के जो अप्रायोगिक फल होते हैं वे माँ-बाप को बाधक होते है। उसी तरह पति-पत्नी के बारे में भी फल का निर्णय करना है। तालिका देखकर दशाओं का आरंभ और अंत समझ लेना है। सप्तवर्गों के आधार पर ग्रहों का बलाबल निश्चित किया गया है।

शुक्र दशा

पहले किए हुए अच्छे कार्यों से इस दशा में सुख-सुविधा और समृद्धि प्राप्त होगी। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। कलाओं में विशेष रुचि होगी। अपने उद्देश्यों की प्राप्ति इस दशा में हो जायेगी। अच्छे कर्मों का अच्छा फल आपको मिलेगा। भिन्न भिन्न सवारियों से कई स्थानों की सैर का आनन्द आपको मिलेगा। कभी कभी दूसरे लोगों की ईर्ष्या भी आप के लिए बाधा बनेगी। संबन्धियों से अलग रहना पड़ेगा। कभी कभी मन की अशान्ति भी अनुभव होगी। विवाह के युक्त आयु होने पर ही जीवन साथी चुनने का योग्य समय माना जा सकता है। पत्नी समेत आनंदमय जीवन व्यतीत होगा। आयु अनुसार सुखद दांपत्य जीवन और संतान प्राप्ति का योग है। दुष्ट व चरित्रहीन व्यक्तियों से दूर रहना ही उचित होगा। सम्मान मिलेगा।

शुक्र बलवान स्थिति धारण किये हुए है। इस कारण अनेक शुभ फल प्राप्त होने की संभावना है। सुख व यश में वृद्धि होगी।

जन्म कुंडली में मालव्य योग बना है। इस कारण आप भाग्यशाली माने जाते हैं। मालव्य योग में लिखित अनेक शुभ योग इस दशा में प्राप्त होंगे।

अपना जीवन आनन्दमय बनाने के लिए कलात्मक वस्तुओं को इकट्ठा करने में आपको विशेष रुचि होगी। इस दशा में दूसरों की सहायता से सफलता प्राप्त होने की अपेक्षा रखनेवाले हैं। मन बहलाने वाली प्रेममय घटनाएँ उत्पन्न होगा । परिवार में विवाह आदि त्योहार मनाया जायेगा। औरतों के सहयोग से आपकी उन्नति होगी। अनुराग, प्रीति, वात्सल्य और मृदुल भाव मानसपटल पर उभरेंगे।

∇ (28-07-2011 >> 28-07-2014)

शुक्र दशा में राहु की अन्तर्दशा में अति जागृत रहते हुए भी निम्न स्वभाव के लोगों के साथ झगड़ना पड़ेगा, वाद विवाद होगा। निकट संबन्धियों को दुःखद घटनाओं का सामना करना होगा। शिक्षा कार्य में लगे हुए लोगों को श्रेष्ठ फल प्राप्त होगा।

∇ (28-07-2014 >> 28-03-2017)

शुक्र दशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा में आपको अच्छा स्वादिष्ट भोजन प्राप्त होता रहेगा। अपनी योग्यता के युक्त अनुकूल आदर प्राप्त होगा। कई दिशाओं से प्रगति होनेवाली है। शिक्षा के लिए अच्छा समय हैं। हस्तकला उधोग में भी प्रगति होना संभव है। बड़ों के प्रति आदर भाव जागृत होगा।

∇ (28-03-2017 >> 27-05-2020)

शुक्र दशा में शनि की अन्तर्दशा में आपको पापकर्मों के प्रति आकर्षण पैदा होगा। आगे चलकर आप को पश्चाताप की आग में जलना पड़ेगा। बड़ों के साथ अयोग्य व्यवहार किया जा सकता है। बच्चों के लिए यह अच्छा समय नहीं हैं। शत्रुओं के लिए पराजय का समय है। सत्कारमय शुभ कार्यों की प्रतीक्षा रहेगी। विदेश में बसनेवाले व्यक्तियों को लाभ सुनिश्चित है।

∇ (27-05-2020 >> 28-03-2023)

शुक्र दशा में बुध की अन्तर्दशा आपको आर्थिक लाभ दिलायेगी। भूसंपत्ति का विकास होगा। आप अपने क्षेत्र में तथा बाहरी कार्य में अच्छा नाम कमायेंगे। गंभीरता से अपने कार्य में जुड़े रहने से सुनिश्चित प्रगति उपलब्ध होगी। मकान और वाहन संबन्धी काम होना संभव होगा।

∇ (28-03-2023 >> 27-05-2024)

शुक्र दशा में केतु के अपहार में अनावश्यक झगड़ों और संघर्षों में पड़ना पड़ेगा। अयोग्य प्रतियोगिता में सम्मिलित होना पड़ेगा। अपने कार्यक्षेत्र में कलह का भोग बनना पड़ेगा। आप के शत्रु आप से पराजित हो रहे हैं यह जानकर कुछ मात्रा में चैन का अनुभव होगा। परिश्रमशील स्थिति जारी रहेगी। अयोग्य संबन्धों से बचते रहने का प्रयास करें।

सूर्य दशा

इस दशा में अत्याग्रही बनकर धन कमाने की इच्छा होगी। दयाभावना की मनोदशा क्षीण होगी। विरोधियों का होना संभव है। उनपर विजय प्राप्त होने की संभावना है। आत्मप्रशंसा सुनना पसन्द होगा। परिवार की भलाई के लिए काम करना प्रिय होगा। परिवार में उन्नति और श्रेय प्राप्त होगा। इस दशा में जानवरों या ज्वर से पीड़ा होने की संभावना है। आंखों, दाँतों और पेट संबन्धी रोग हो सकते हैं और अभी से उनपर ध्यान देना अच्छा होगा। पारिवारिक जीवन पर ज़रा अधिक ध्यान देना होगा। पूज्य जनों तथा अन्य प्रधान व्यक्तियों से मतभेद होने की संभावना है। अपने अधीन में काम करनेवाले लोगों की वजह से आर्थिक संकट में पड़ सकते हैं। आप यदि शिक्षण कार्य में लगे हुए हैं तो श्रेष्ठ उपाधि और सम्मान प्राप्त होने की संभावना है। यात्रा होने का योग बनेगा।

सूर्य सप्तवर्गीय बल से युक्त है। वृद्धि, अधिकार, धन, लाभ, आत्मबल, वृद्धि के साथ-साथ घर परिवार में नये सदस्य का आगमन भी संभव है।

इस दशा में मानसिक और आत्मीय कार्यों में सिद्धि प्राप्त होगी। विरोधियों को जीतना आसान होगा। खूब सैर करने की संभावना है। अपने पिता की पदोन्नति होगा या पूज्य जनों से आपकी उन्नति होगी। आप को पदोन्नति और प्रसिद्धि मिलेगी। लकड़ी, कपड़े या औषधियों का व्यापार भी लाभदायक हो सकता है। शक करने की आदत से मुक्त होना लाभदायक होगा।

∇ (27-05-2024 >> 14-09-2024)

सूर्य दशा में सूर्य की अन्तर्दशा में आपकी प्रगति होगी। आपको आर्थिक सहायता, उधार, तकनीकि की सहायता बिना देरी के प्राप्त होगी। उच्चधिकारियों की अनुकूलता आपको प्राप्त होगी। आप सामान्यतः पित्त के प्रकोप से बीमार पड़ने की संभावना रखते हैं। इसलिए इस काल में विशेष ध्यान देना चाहिए। परिवार के लोगों तथा अन्य रिश्तेदारों के व्यवहार से आपको निराश होना पड़ेगा। मानसिक उद्वेग का अनुभव होगा। आमदनी और खर्च में अस्थिरता का अनुभव होगा।

∇ (14-09-2024 >> 16-03-2025)

सूर्य दशा में चन्द्र की अन्तर्दशा के प्रभाव से आप शान्त और सौम्य रहेंगे। आप अपने सब से पुराने शत्रुओं से भी समझौता करने का विचार करेंगे। समाधानपूर्ण जीवन और ऐश्वर्य प्राप्त होगा। सुख संपन्नता में अभिवृद्धि होगी। घर में मांगलिक कार्यों का आयोजन होगा।

∇ (16-03-2025 >> 21-07-2025)

सूर्य दशा में मंगल की अन्तर्दशा में आप से बड़ों का व्यवहार और रुख अनुकूल रहेगा। उच्चधिकारियों से संबन्ध धनिष्ठ बनेंगे। आपकी आय में वृद्धि या पदोन्नति आसानी से हो सकेगी। आपकी स्वाधीनता एवं जनप्रीति बढ़ती रहेगी। समूह के बीच मान्यता सुनिश्चित है।

∇ (21-07-2025 >> 15-06-2026)

सूर्य दशा में राहू के अपहार में आपका मन असाधारण रूप में निर्बल होगा और आप सभी बातों तथा सभी लोगों पर शंका करने लगेंगे। वात प्रकृति के लोग इस समय ज़्यादा पीड़ित होते हैं। धारणा के अनुकूल धन की बचत नहीं हो पायेगी। आप अपने शारीरिक स्वास्थ्य के कारण, पद की प्रतिष्टा और योग्यता पर परेशान हो जाएँगे। आपको अपने माँ-बाप की तन्दुरुस्ती पर भी ध्यान देना पड़ेगा।

∇ (15-06-2026 >> 03-04-2027)

सूर्य दशा में बृहस्पति के अपहार में आपका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। स्वास्थ्य और तन्दुरुस्ती में पहले से ज़्यादा प्रगति होगी। जहाँ आप अपने मन को दृढ़ रखेंगे वहाँ विजय सुनिश्चित है। शत्रु लोग भी मित्र बनने लगेंगे। परिश्रम के माध्यम से सफलता प्राप्त होगी। मांगलिक कार्य होंगे।

∇ (03-04-2027 >> 15-03-2028)

सूर्य दशा में शनि के अपहार में अनेक कार्य आप के नियंत्रण के अधीन रहेंगे। अपनी योजना एवं बजट के ऊपर सभी कार्य होते रहेंगे। भूसंपत्ति एवं मकान इत्यादि के मूल्य गिर पड़ेंगे। इससे कुछ परेशानी का अनुभव होगा। जहाँ सहयोग की अपेक्षा थी वहाँ से निराशा प्राप्त होगी। मन प्रमाद से भर न जाये और विरक्तता में डर न जाये इसलिए जाग्रत रहें। नेत्र रोगों से बचने का प्रयास रखें। यह लाभदायक होगा।

∇ (15-03-2028 >> 20-01-2029)

सूर्य दशा में बुध का अपहार आपको चर्म रोग देनेवाला होगा। एर्लजी से परेशान होना पड़ेगा। इस विषय में एक विशिष्ट डाक्टरी सलाह अच्छी होगी। कठिन परिश्रम करने के अवसर पर आप में सुस्ती और उदासीनता पैदा होने की संभावना है। इस उदासीनता से जल्दी से मुक्त होना है अन्यथा अनेक प्रकार के कष्ट सहने पड़ेंगे।

∇ (20-01-2029 >> 28-05-2029)

सूर्य दशा में केतु के अपहार में आप अपना जन्म देश छोड़कर किसी दूर देश की यात्रा करेंगे। मन लंबी यात्रा का भी बनेगा। स्वजनों के वियोग को सहने में समर्थ हैं। तरह तरह का विलंब और रुकावटें आपके सामने आती रहेगी जिन्हें देखकर आप क्षुब्ध हो जायेंगे। मन में घृणा पैदा करनेवाली अनेक घटनायें घटित होगी। उचित कार्यों में रुकावट पैदा होगी।

∇ (28-05-2029 >> 28-05-2030)

सूर्य दशा में शुक्र के अपहार में आपको शारीरिक विकार होता रहेगा। आप अपने कर्म एवं सामाजिक कार्य बड़े उत्साह के साथ करते रहेंगे। शुभ फलों की प्राप्ति होगी। आप अपने लक्ष्य की प्राप्ति कर पायेंगे। इस काल में सिरदर्द या आँखों की पीड़ा होना संभव है। इस प्रकार शारीरिक अस्वस्थता उत्पन्न होगी।

चंद्र दशा

इस दशामें आध्यात्मिक और भक्ति कार्यों में आपका अधिक ध्यान बंट जाएगा। उससे सुख और शान्ति मिलेगी। अपनों से बड़ों का आदर किया जायेगा। सुख और समृद्धि बढ़ेगी। औरतों से मिलजुल कर रहने का स्वभाव रहेगा। खान-पान में कुछ नियमित परिवर्तन होगा। अपनी तन्दुरुस्ती की तरफ़ ज़्यादा ध्यान देना है। थकान का अनुभव होने की संभावना है। शरीर की सन्धियों में दर्द हो सकता है। नये मकान के निर्माण और ऐश्वर्य प्राप्ति का योग है। परिवार में विवाह कार्य होने की संभावना है। युवतियों की ओर आकर्षित होने की संभावना है। हड्डियों की बीमारी से बचते रहना अच्छा है। माता से संबन्धित फल प्राप्त होने की संभावना है। २० से ३० वर्ष की आयु के मध्य यदि यह दशा पड़े तो इस दशा में विवाह होने व संतान सुख प्राप्ति का सुयोग प्राप्त होता है।

∇ (28-05-2030 >> 28-03-2031)

शादी का समय हो तो, वह चन्द्र दशा में स्वअंतर दशा के योग से विवाह कार्य सफल होगा। उत्तम सन्तानों का जन्म भी इसी स्थिति में होता है। श्रेष्ठ वस्त्रालंकार की प्राप्ति होगी। प्रेम और सद्भाग्य परिवार के बीच उत्पन्न होगा। अविचारित स्थानों से सहायता प्राप्त होगी। आपको आनन्द मनाने और विश्राम लेने का समय भी मिलेगा जो अत्यन्त आवयक है। मातृ स्थान के लिए यह अच्छा समय रहेगा।

∇ (28-03-2031 >> 27-10-2031)

चन्द्र दशा में (मंगल) कुज की अन्तर्दशा के योग में आग, शस्त्र, बिजली आदि से सजग रहना आवयक है। बिजली पर चलनेवाले उपकरण का उपयोग करते वक्त विशेष ध्यान देना है। अपने कार्यक्षेत्र में परिवर्तन की संभावना है। अकारण कटु वचन सुनना पड़ेगा।

∇ (27-10-2031 >> 27-04-2033)

चन्द्र दशा में इस समय आप को अकारण भयभीत होना पड़ेगा और मन में परेशानी होगी। यह राहू की अन्तर्दशा के प्रभाव से होता है। रोगों का होना और शत्रुओं का आक्रमण होना सर्वसाधारण है। आँधी अथवा बाढ़ से आपकी भूसंपत्ति का नुकसान होने की संभावना है। व्यर्थ ही उत्कण्ठित रहना पड़ेगा।

∇ (27-04-2033 >> 27-08-2034)

चन्द्र दशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा के कारण आप को सामान्यतः अनुकूलता का अनुभव होगा। आदर्श जीवन तथा प्रायोगिक जीवन दोनों एक साथ आपको सुखी बनायेंगे। पारिवारिक परिस्थिति सुखमय और मंगलमय रहेगी। आपका वस्त्रालंकार के प्रति ज़्यादा रस पैदा होगा।

अविचारित अतिथियों का आगमन होगा। अनेक प्रकार के उपहारों की प्राप्ति होगी। घर में विवाहादि मांगलिक काम होंगे। विद्वानों से परिचय होगा।

∇ (27-08-2034 >> 27-03-2036)

चन्द्र दशा में शनिचर की अन्तर्दशा चल रही है। इस समय परिवार में कोई विशेष अप्रिय घटना घटित होने की संभावना है। आश्चर्य उत्पन्न करनेवाला व्यवहार मित्रजन और परिवार के लोगों से उत्पन्न होगा। दुर्घटनायें एवं असुविधाओं की संभावना है। माता या माता तुल्य पूज्य महिला को कष्ट की संभावना है। यह टालना मुश्किल है।

∇ (27-03-2036 >> 27-08-2037)

चन्द्र की दशा में बुध की अन्तर्दशा में अनेक आनन्दपूर्ण घटना घटित होगी। यह एक अच्छा समय है। ईश्वर के अनुग्रह से आप के भाग्य में रचनात्मक परिवर्तन दिखाई देगा। आप अभी से कठिन परिश्रम करें तो आपकी सफलता निकट ही है। रुके हुए काम सफल होंगे। धन, सुख सुविधा और संबन्धों में वृद्धि होगी।

∇ (27-08-2037 >> 28-03-2038)

चन्द्र दशा में केतु की अन्तर्दशा के योग से आपको मानसिक शान्ति मिलेगी और भयमुक्त दशा प्राप्त होगी। आत्मविश्वास भी बढ़ता रहेगा। आपका मन अयोग्य कार्यों के प्रति आकर्षित होगा। आप सजग न रहें तो कई कष्टों का होना संभव है।

प्रारंभ से **27-05-2040**

मंगल दशा

इस दशा में बहुत सा धन कमाया जाएगा। कठिन परिश्रम भी करना पड़ेगा। पशु पक्षियों से बड़ा लाभ होगा। बच्चों या भाइयों से झगड़े हो सकते हैं। दुराचारी औरतों के संपर्क में रहने की संभावना है। फिज़ूल खर्च होनेवाला है। आग से नुकसान न होने के लिए ध्यान देना होगा। शरीर में थकावट और पीलापन होने की संभावना है। स्वास्थ्य का बराबर परीक्षण कराना अथवा आवश्यक दवाएँ लेना उचित रहेगा। सामान्यतः यह दशा सुखमय रहेगी और आपकी आशाओं की पूर्ति करेगी। धन संपादन कार्य में अभिरुचि रहेगी। पिता और गुरुजन के प्रति अभद्र व्यवहार करने की संभावना है। मलिन और हीन वृत्ति के लोगों से मिलना जुलना पड़ेगा। व्यर्थ के धन खर्च से बचना उचित होगा। अग्नि और दुर्घटना से बचते रहना होगा। कुज की दशा में पुरुष अति उन्नति प्राप्त कर सकता है। पत्नी और पुत्र के साथ झगड़ा हो सकता है। अकारण क्रोधित होने की संभावना है। सामान्य सर्जरी की आवश्यकता पड़ सकती है।

प्रारंभ से **28-05-2047**

राहु दशा

राहु जुआ और कल्पनाओं का देवता है। इस दशा काल में व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन और बुराइयाँ आ सकती है। परिवार के लोग और साथी लोग आपको शंका की दृष्टि से देखेंगे। इस काल में किसीसे झगड़ा न हो इसकी ओर ध्यान देना है। रोगों से पीड़ा होने की संभावना है। विषबाधा से बचने की कोशिश करनी है। विरोधियों से आपको सामना करना होगा। रिश्तेदार भी विरोधी बनने की संभावना रखते हैं। उच्च अधिकारियों का अनुग्रह कम होगा। गले में दर्द और आँखों के रोग होने की संभावना है। ई.एन.टी डाक्टर के उपदेश के अनुसार रोग होने से पहले ही उपचार करना अच्छा होगा। राहु सब के लिए एक सा नहीं होता। अच्छे स्थान पर हो तो सन्तान सुख, समृद्धि और सब प्रकार के ऐश्वर्य देनेवाला होता है। चर्म रोग से पीड़ा अनुभव होगी। विवाहित होने पर पत्नी और संतान का कुछ दुख सहना होगा। राहुदशा जब बालावस्था काल में आती हैं तो अभ्यास क्षेत्र में विक्षेप अनुभव होता है। दांत की पीड़ा हो सकती है। ज़हरीली वस्तुओं से बचना आवश्यक है। सचेत रहना होगा। शत्रुओं के आक्रमण से सजग रहना होगा। बड़ों से मिलते सहयोग में क्षति होगी। इस काल में भक्तिपूर्ण जीवन शाँति प्रदान करता है। धन की अल्पता मानसिक सुख की कमी, असंतोष की अधिकता, शत्रु से विवाद और

अत्यधिक आपसी आदि फल प्राप्त होंगे।

गोचर फल

नाम : **Sinto Placid** (पुरुष)
जन्म राशी : **कर्क**
जन्म नक्षत्र : **आशलेष**

गृहस्थिती : 14-जूलाई- 2014
अयनांश : चित्रपक्ष

जन्मस्थ ग्रहों की स्थिति एवं वर्तमान की उनकी गोचर परिस्थिति का सामूहिक अध्ययन करने के बाद, निकट के भविष्य को भलीभाँति जाना जा सकता है। इस विषय में सूर्य, गुरु और शनि की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। यद्यपि जन्म कुंडली के प्रमुख योगायोग, दशान्तर्दशा तथा वर्तमान में अन्यान्य ग्रहों का गोचर संचार नीचे लिखे फलों में न्यूनाधिक करने की क्षमता रखते हैं।

सूर्य का गोचर फल।

प्रत्येक राशि में सूर्य एक महीने तक रहता है। आपकी जन्म राशि से अगली तीन राशियों में सूर्य जा फल देगा, उसका दिग्दर्शन नीचे कराया जा रहा है -

∇ (16-जून-2014 >> 16-जूलाई-2014)

इस समय सूर्य बारहवाँ भाव का सक्रमण करेगा

सूर्य अनुकूल नहीं हैं। अपने कार्य क्षेत्र में अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। सहकर्मियों से या अपने समीप में रहनेवालों के प्रति सख्त व्यवहार करना पड़ेगा या कटु वचन कहना पड़ेगा। शारीरिक अस्वस्थता दूर करने का प्रयास करना पड़ेगा। व्यर्थ की लंबी यात्रा करनी होगी। लापरवाह रहने से तबियत पर बुरा असर पड़ने की संभावना है। मानसिक ग्लानि से मुक्त होने का प्रयास अनिवार्य बन पड़ता है। व्ययाधिक्य से बचपाना असंभव नहीं हो कठिन अवश्य है।

∇ (16-जूलाई-2014 >> 15-अगस्त-2014)

इस समय सूर्य जन्म भाव का संक्रमण करेगा ।

आपने युवावस्था में प्रवेश किया है। मन और शरीर दोनों पूर्णता की ओर तीव्र गति से बढ़ रहे हैं। विचारधारा, अभिलाषा और मनोभाव में परिवर्तन का अनुभव होगा। अनुकूल संजोगों के अनुसार हानि होना संभव है। निवास स्थान में, पढाई में और प्रवृत्ति में परिवर्तन की संभावना है। प्रवृति और यात्रा, दोनों को आकस्मिक समस्याओं का सामना करना होगा। अनेक प्रयत्नों के बावजूद भी उस से बचना कठिन हैं। क्रोध पर नियन्त्रण रखना हर दृष्टि से हितकर होगा।

∇ (15-अगस्त-2014 >> 14-सितंम्बर-2014)

इस समय सूर्य दूसरा भाव का सक्रमण करेगा

वर्तमान स्थिति सर्वदा रहने वाली नही हैं। इस कारण व्यर्थ में घबराना अनुचित होगा। आपकी व्यथा धीरे धीरे कम होगी। अप्रत्यक्षमार्ग से

सफलता और मान्यता प्राप्त होगी। आमदनी के मार्ग स्पष्ट और सरल बनेंगे। आर्थिक स्थिति में अधिक स्वतंत्र बनने की अभिलाषा जाग्रत होगी। प्रारंभ काल में आर्थिक स्थिति में तनाव रहेगा। मन और दिमाग दोनों को कठिन कार्य में लगाने पड़ेंगे। स्वास्थ्य की ओर सजग रहें तो लाभकारी होगा।

गुरु का गोचर फल।

गुरु हर राशि के बीच एक साल तक रहता है। गुरु के कारण मिलनेवाले फल की प्राप्ति अति प्रधान होती है।

∇ (20-जून-2014 >> 14-जूलाई-2015)

इस समय गुरु जन्म भाव का संक्रमण करेगा ।

छोटी छोटी बातों को विकराल स्वरूप देने से व्यर्थ के तर्क कुतर्क उत्पन्न होते हैं। इनसे बचते रहना और भविष्य में आगे चलकर मन में पश्चाताप करना पड़े ऐसे कार्यों से दूर रहना अनिवार्य है। सट्टे बाजारी में लाभ नहीं है। हानि और कष्ट उत्पन्न करनेवाले कार्यों से बचते रहने का प्रयास करना आवश्यक है। उसमें संपूर्ण सफलता न मिले तो दुःखी होने की आवश्यक नही हैं। कुछ हद तक बच सकते हैं। अपने कार्य क्षेत्र में और वर्तमान पद को छोटा सा धक्का लगेगा।

∇ (15-जूलाई-2015 >> 11-अगस्त-2016)

इस समय गुरु दूसरा भाव का सक्रमण करेगा

आप के सेवापूर्ण कार्यों को मान्यता प्राप्त होगी। भय मुक्त होंगे और धैर्यपूर्ण कार्यों को आगे बढ़ाने में शक्तिमान बनेंगे। राष्ट्रीय कार्यों में और अपने कार्यक्षेत्र के प्रति अभिरुचि जाग्रत होगी। उठाये गये श्रम का फल अनिवार्य प्राप्त होगा। बुज़ुर्गों के संपर्क से सुख में वृद्धि होगी। सुख और आनन्द प्राप्त होगा। व्यावसायिक प्रगति प्रतिष्ठा में वृद्धि और राजकीय अनुकूलता आदि फल प्राप्त होंगे।

शनि का गोचर फल।

शनि का गोचर फल साधारण स्थिति में शनि से दुःखद अनुभव ही होता है। शनि के योग के कारण अस्वस्थ स्थिति उत्पन्न होती है। मन उद्वेग से भर उठता है। यह सब होते हुए भी कभी कभी अप्रतिक्षित मार्ग से शनि अनेक लाभ भी प्रदान करता है। हर राशि के मध्य शनि दो वर्ष तक स्थान ग्रहण करता है।

∇ (5-अगस्त-2012 >> 2-नवेम्बर-2014)

इस समय शनि चौथा भाव का सक्रमण करेगा

शारीरिक अस्वस्थता का अनुभव होगा। मानसिक अशांति भी उत्पन्न होगी। कोई अपशकुन भरा कार्य घटित होने की संभावना बार-बार सताती रहेगी। प्रभु आर्शीवाद से कुछ राहत के साँस ले सकते हैं। इस कारण प्रभु भक्ति में निष्ठा रखना योग्य होगा। यह आपके लिए महत्वपूर्ण समय माना जा सकता है। स्वगृह से (निवास स्थान से) दूर की यात्रा की सूचना है। अनेक प्रयास के बावजूद परिवार के अन्य अंगों के माध्यम से और मित्रों से अप्रिय व्यवहार का सामना करना होगा। यह सब कण्टक शनि के प्रभाव से हो रहा है। शय्या सुख में बाधा उत्पन्न होगी।

∇ (3-नवेम्बर-2014 >> 26-जानुवरी-2017)

इस समय शनि पंचम भाव का सक्रमण करेगा

नट-खट बच्चों से पीड़ा प्राप्त होगी। अपने अनेक स्वजनों से दूर रहना पड़ेगा। इस व्यथा का अंत कुछ ही समय में आनेवाला है। कुछ अरसे के बाद शनि अनुकूल स्थिति पैदा करनेवाला है। इस कारण शाँति का अनुभव होगा। अध्ययन, मनन और लेखन कार्य में मन नहीं लगा सकेगा। यदि विवाहित हैं तो पत्नी को प्रसव पीड़ा का सामना करना पड़ जा सकता है।

With best wishes : Astro-Vision Futurtech Pvt.Ltd.
First Floor, White Tower, Kuthappadi Road, Thammanam P.O - 682032

[LifeSign 12.5.1.0]

Note:

This report is based on the data provided by you and the best possible research support we have received so far. We do not assume any responsibility for the accuracy or the effect of any decision that may be taken on the basis of this report.